कोटद्वार, शुक्रवार
9 मई 2025
वर्ष: 47
अंक: 19 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक: स्व. नरेन्द्र उनियाल
डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

नैनीताल के पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाई

हल्द्वानी। ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देने के बाद नैनीताल जिले में भी सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई है। जिले के पर्यटक स्थल नैनीताल, भीमताल, रामनगर समेत अन्य इलाकों में अतिरिक्त पुलिस और पीएसी को तैनात किया गया है। सार्वजनिक और धार्मिक स्थलों के अलावा जिले की बड़ी इमारतों पर हथियार से लैस जवानों को तैनात किया गया है। अतिरिक्त फोर्स के रूप में प्रादेशिक सशस्त्र कांस्टेबुलरी(पीएसी), उत्तराखंड विशेष फोर्स और सिविल पुलिस के जवानों को ड्यूटी पर लगाया गया है। पहलगाम में आतंकियों ने 15 दिन पहले निर्दोष 26 पर्यटकों को मौत के घाट उतार दिया था। जिसके बाद से पूरा देश पाक समर्थित आतंकियों पर जवाबी कार्रवाई की मांग कर रहा था। मंगलवार–बुधवार की रात पाकिस्तान के कब्जे वाले इलाके में भारतीय सेना व सशस्त्र बलों ने एयर स्ट्राइक की और आतंकियों के नौ ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया था। डीजीपी दीपम सेठ ने इसके बाद मंडल के आईजी को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था लागू करने को कहा था। जिसके बाद से पर्यटक स्थलों, हाईकोर्ट, राजभवन, हेलीपैड जैसी बड़ी इमारतों में चौकसी बढ़ा दी गई है। अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम, धार्मिक और सार्वजनिक स्थलों के साथ ही शहर के चौराहों पर पहरा बढ़ा दिया गया है। सीओ सिटी नितिन लोहनी ने बताया कि दो प्लाटून पीएसी और विशेष फोर्स के अलावा 80 से अधिक पुलिस के जवानों की अतिरिक्त ड्यूटी लगाई गई है।

जीप खाई में गिरी, स्कूली छात्रों समेत नौ घायल

बागेश्वर। गरुड़ के प्रियापानी से सवारी लेकर हल्द्वानी जा रही एक जीप लोहारी के पास क्षतिग्रस्त हो गई। इस हादसे में दो स्कूली छात्र समेत नौ लोग घायल हो गए। घायलों को 108 से सीएचसी बैजनाथ भर्ती किया गया। चार लोगों को उपचार के बाद घर भेज दिया। अन्य को भर्ती किया गया। घायल के परिजनों ने चालक पर नशे में वाहन चलाने का आरोप लगाया। पुलिस घटना की जांच में जुट गई है। कौसानी पुलिस के अनुसार जीप संख्या यूके–02–टीए– 1248 प्रियापानी गरुड़ से सवारी लेकर गुरुवार को हल्द्वानी के लिए रवाना हुई। रास्ते से दो स्कूली छात्र भी उसमें बैठ गए। लोहारी के पास जीप असंतुलित होकर सड़क के नीचे खाई में गिर गई। इस हादसे में चालक संतोष कुमार पुत्र प्रेम राम निवासी कौसानी, 64 वर्षीय दीवान राम पुत्र शेर राम, 33 वर्षीय शोभा पत्नी हिमांशु, पांच वर्षीय दिव्यांशु, एक वर्षीय कार्तिक, 51 वर्षीय जगदीश राम पुत्र प्रेम राम, 16 वर्षीय हर्षित पुत्र जगदीश राम, 16 वर्षीय रोहित कुमार पुत्र विनोद कुमार तथा 18 वर्षीय करण कुमार पुत्र कैलाश राम घायल हो गए। घायलों को 108 से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बैजनाथ भर्ती किया गया। यहां से चार लोगों को उपचार के बाद छुट्टी दे दी। घायलों के परिजनों ने ड्राइवर पर शराब पी कर गाड़ी चलाने का आरोप लगाया। पुलिस की मौजूदगी में ड्राइवर का मेडिकल कराया गया। जांच के बाद चिकित्सा अधिकारी गौरव पांगती ने बताया कि घायलों का इलाज जारी है। चालक के नशे में होने की पुष्टि नहीं हुई है। पुलिस घटना की जांच में जुट गई है।

ट्रक–डंपर की भिड़ंत में टेम्पो पलटा, पांच घायल

रुद्रपुर। आदित्य चौक से आगे एनएच– 74 के तिराहे पर दूध के ट्रक और डंपर की टक्कर हो गई। इनकी चपेट में आकर सवारियों से भरा टेम्पो पलट गया। हादसे में पांच लोग घायल हो गए। उधर से गुजर रहे पूर्व विधायक राजेश शुक्ला ने गंभीर रूप से घायल ट्रक चालक को सीएचसी पहुंचाया। वहां अन्य घायलों का भी अस्पताल में उपचार किया गया। बुधवार रात लगभग दस बजे एनएच–74 के तिराहे पर बरेली की दिशा से आ रहा ट्रक आदित्य चौक की तरफ प्रवेश कर रहा था। इस दौरान रुद्रपुर की ओर से आ रहा एक डंपर भी इसी दिशा में मुड़ गया। जिसके कारण दोनों में भिड़ंत हो गई। इधर, किच्छा की ओर से जा रहा टेम्पो दोनों वाहनों की चपेट में आने से पलट गया। हादसे में ट्रक चालक अखिलेश निवासी कासगंज, हेल्पर प्रदीप और टेम्पो में बैठे अशोक बिष्ट, देवेन्द्र सिंह, मो. असद मामूली रूप से घायल हो गए। इधर, पूर्व विधायक राजेश शुक्ला जब घटनास्थल से होकर गुजरे तो उन्होंने ट्रक चालक अखिलेश को गंभीर अवस्था में देखा।

सेना ने जैसलमेर में मार गिराए पाकिस्तानी ड्रोन

राजस्थान में हाई अलर्ट

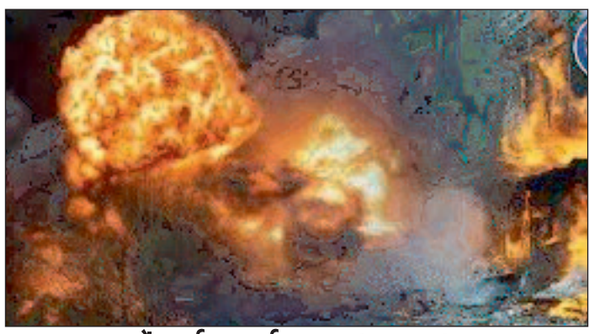

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना के "ऑपरेशन सिंदूर" के बाद राजस्थान पुलिस ने पाकिस्तान से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई। पाकिस्तान ने गुरुवार रात 8:45 बजे एक बार फिर जम्मू में मिसाइल से हमला करने की कोशिश की। इसके बाद जम्मू से लेकर राजस्थान तक ब्लैक आउट कर दिया गया है। न्यूज एजेंसी अठक के अनुसार जैसलमेर में भारतीय वायु रक्षा द्वारा पाकिस्तानी ड्रोन को रोका गया। राजस्थान बार्डर के नजदीक सभी जिलों में ब्लैक आउट कर दिया गया है। विस्फोटों की आवाज़ सुनी जा सकती है, और आसमान में चमकती हुई रोशनी देखी जा सकती है। बाड़मेर डीएम से जानकारी देते हुए बताया कि राजस्थान स्थिति सामान्य है, किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं है। हमले की आशंक के चलते प्रशासन की ओर से पहले ही सतर्कता बरती जा रही है। इस संदर्भ में राजस्थान पुलिस ने अपने सभी पुलिसकर्मियों की सभी प्रकार की छुट्टियों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। पैरामेडिकल स्टाफ की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि एहतियात के तौर पर श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में सरकारी और निजी स्कूल बंद कर दिए गए हैं। जोधपुर के सभी कॉलेजों को भी बंद रखने का आदेश दिया गया है। इसके अलावा एहतियात के तौर पर बीकानेर, अजमेर के किशनगढ़ और जोधपुर हवाई अड्डों पर 10 मई तक उड़ानों का परिचालन निलंबित कर दिया गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति का जायजा लेने के बाद यह निर्णय लिया गया। सूत्रों के अनुसार मुख्य सचिव सुधांश पंत और राज्य पुलिस प्रमुख यूआर साहू ने संभागीय आयुक्तों, कलेक्टरों और पुलिस महानिरीक्षकों तथा पुलिस अधीक्षकों के साथ समीक्षा बैठक की और उन्हें अपने मुख्यालयों में मौजूद रहने के निर्देश दिए।

भारत ने पाकिस्तान पर फिर किया हमला

श्रीनगर ,भारत ने पहलगाम हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया है। ताजा जानकारी सामने आ रही है कि भारत ने पाकिस्तान के एयर डिफेंस यूनिट पर मिसाइल लॉन्चर से हमला किया है। जिससे एयर डिफेंस यूनिट पूरी तरह से तबाह हो गई है। हालांकि इस हमले में कोई जानमाल का नुक्सान हुआ है या नहीं, अभी इसके बारे में पूरी जानकारी सामने नहीं आई है। बताया जा रहा है कि एयर डिफेंस यूनिट पर हमले के बाद अफरातफरी मची हुई है।

इससे पहले भारत ने पाकिस्तान और गुलाम जम्मू–कश्मीर (पीओके) में मिसाइलों से हमला करते हुए नौ आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया गया। भारतीय सेना और वायुसेना ने संयुक्त ऑपरेशन के तहत लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मोहम्मद के मुख्यालयों पर धावा बोलकर उन्हें ध्वस्त किया। ये ठिकाने पाकिस्तान के सबसे बड़े आतंकी सरगना हाफिज सईद व मसूद अजहर का अभेद्य किला माने जाते थे।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद केंद्र सरकार ने आज संसद भवन में सर्वदलीय बैठक बुलाई थी। बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की।

हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त : छः लोगों की मौत

खाई में गिरते ही हुए दो टुकड़े...हेलिकॉप्टर को काटकर बाहर निकाले शव

उत्तरकाशी। गंगोत्री धाम जा रहा एक हेलिकॉप्टर गंगनानी के समीप दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस घटना में पांच महिलाओं समेत 6 लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे हेली एंबुलेंस से एम्स ऋषिकेश भेजा गया।

गंगनानी का हेलिकॉप्टर हादसा बहुत भयावह था। वहां पर खोज–बचाव अभियान चला रहे अधिकारी कर्मचारियों ने बताया कि घटना में हेलिकॉप्टर के भी दो टुकड़े हो गए थे। वहीं दो शव हेलिकॉप्टर में ही फंस गए थे। उन्हें निकालने के लिए हेली को काटना पड़ा। वहीं करीब 200 मीटर गहरी खाई में रेस्क्यू अभियान चलाना बहुत मुश्किल था।

बृहस्पतिवार सुबह करीब पौने नौ बजे गंगनानी में हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होते ही जिला प्रशासन सहित पुलिस और पूरा सिस्टम अलर्ट पर दिखा। एसपी सरिता डोबाल सहित एडीएम पीएल शाह और एसडीएम शालिनी नेगी सभी विभागों की संयुक्त टीम बनाकर घटनास्थल पर पहुंचे। तो वहीं जिलाधिकारी डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट ने आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारियों के साथ मास्टर कंट्रोल रूम से रेस्क्यू अभियान की निगरानी करते रहे। साथ ही शासन से भी उचित मदद के लिए संपर्क में रहे।

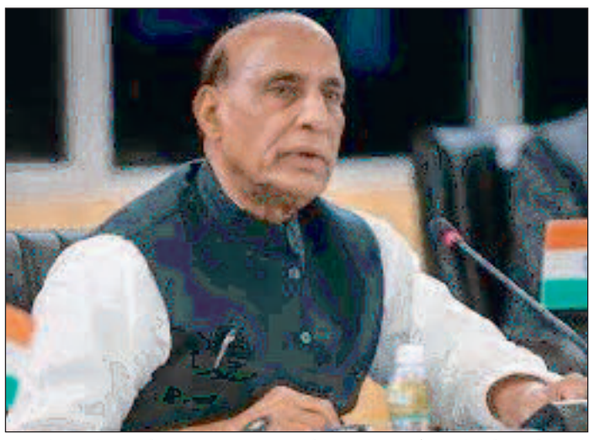

पाक की टेंशन बढ़ी , आपरेशन सिंदूर अभी जारी

नई दिल्ली , केंद्र सरकार द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के बारे में सभी राजनीतिक दलों को जानकारी देने के लिए आज सर्वदलीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है। यानी 7 मई को पाकिस्तान के 9 ठिकानों पर हुए एयर स्ट्राइक के बाद भी ऑपरेशन रोका नहीं गया है। करीब डेढ़ घंटे चली बैठक से बाहर आने के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने भी रक्षा मंत्री के बयान को दोहराया। कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा है कि संकट की इस घड़ी में देशहित में समूचा विपक्ष सरकार के साथ खड़ा है।खरगे ने गुरूवार को यहां हिस्सा लेने के बाद संवाददाताओं के साथ बातचीत में यह बात कही। खरगे ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और अन्य नेताओं की मौजूदगी में कहा कि सरकार ने सभी राजनीतिक दलों को पहलगाम हमले के बाद भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर में नौ ठिकाने पर की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए कहा है कि वह कुछ गोपनीय जानकारी अभी सार्वजनिक नहीं कर सकती। खरगे ने कहा कि इस तरह की संकट की घड़ी में हम सरकार पर इसके लिए दबाव नहीं डाल रहे हैं और राष्ट्र हित में सरकार के साथ खड़े हैं।

बैठक की अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की। इसके अलावा इसमें सरकार की ओर से गृह मंत्री अमित शाह, जगत प्रकाश नड्डा, विदेश मंत्री एस जयशंकर , वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण , समाजवादी पार्टी के रामगोपाल यादव , द्रमुक के टी आर बालू , एआईएमआईएम के असदुदीन ओवैसी , तृणमुल कांग्रेस के सुदीप्त बंदोपाध्याय , शिवसेना के श्रीकांत शिंदे, आम आदमी पार्टी के संजय सिंह , मार्क्सवादी पार्टी के जॉन ब्रिटास , लोकजन शक्ति पार्टी के चिराग पासवान, बीजू जनता दल के सस्मित पात्रा और द्रमुक के तिरूचि शिवा ने बैठक में हिस्सा लिया।

भारत को एक और सफलता, कंधार हाईजैक कांड का मास्टरमाइंड ढेर

इस्लामाबाद , आपरेशन सिंदूर को लेकर नया अपडेट सामने आया है। खबर है कि ऑपरेशन सिंदूर में आतंकी रऊफ़ अजहर की मौत हो गई है। रऊफ़ असगर ब्ढ्ष्ट–814 प्लेन हाई जैक जिसे कंधार प्लेन हाई जैक के नाम से जाना जाता है उसका मास्टरमाइंड था। बुधवार को रऊफ़ अजहर ऑपरेशन सिंदूर में मारे गए आतंकियों के जनाजे की नमाज पढ़ाता नजर आया था। भारत ने पहलगाम हमले के बाद फिर दोहराया था कि वो आतंकियों को घर में घुस कर मारेगा। रऊफ़ की मौत इसी का एक और उदाहरण है। रऊफ़ कंधार हाईजैक का मास्टरमाइंड था। कई आतंकी हमलों में उसका नाम सामने आया था। इससे पहले मंगलवार देर रात भारत सरकार की सैन्य कार्रवाई में मसूद अजहर का कुनबा उजड़ गया था। भारत की एयरस्ट्राइक में जैश–ए–मोहम्मद के आतंकी अजहर के परिवार के 10 सदस्य मारे गए थे जबकि उसके चार गुर्गे भी ढेर हो गए थे। इन घायलों में रऊफ़ भी था।

पाकिस्तानी सेना के 12 जवानों की मौत, बलोच आर्मी ने आईईडी विस्फोट से उड़ाई गाड़ी

इस्लामाबाद , भारत की एयरस्ट्राइक के बाद पाकिस्तान के लिए संकट और गहरा गया है। इस बार झटका अपने ही देश बलूचिस्तान से मिला है। बलोच लिबरेशन आर्मी ने एक बार फिर पाकिस्तानी सेना को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। दक्षिण–पश्चिमी प्रांत बलूचिस्तान के माच कुंड क्षेत्र में ब्ल्र्ब्क्र के स्पेशल टैक्टिकल ऑपरेशन स्क्वैड ने सेना की गाड़ी को रिमोट कंट्रोल से उड़ा दिया, जिसमें 12 जवानों की जान चली गई। हमला उस वक्त हुआ जब सुरक्षाबलों की टीम किसी सैन्य ऑपरेशन के लिए जा रही थी। धमाका इतना जबरदस्त था कि सेना की गाड़ी के परखच्चे उड़ गए और जवानों के शव कई मीटर तक बिखर गए। घटना की फुटेज अब सोशल मीडिया पर वायरल है, जिसमें धमाके की भयावहता साफ नजर आ रही है। हालांकि पाकिस्तानी सेना ने आधिकारिक बयान में सिर्फ 7 सैनिकों की मौत की पुष्टि की है। सेना ने यह भी बताया कि हमले के बाद इलाके में सघन तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

चंडीगढ़, अमृतसर समेत ये 27 एयरपोर्ट्स 10 मई तक रहेंगे बंद

नई दिल्ली ,भारत की ओर से 'ऑपरेशन सिंदूरझ् सफलतापूर्वक किए जाने के बाद गुरुवार को करीब 430 नागरिक उड़ानों को रद्द कर दिया गया है। यह देश की कुल शेड्यूल उड़ानों का करीब 3 प्रतिशत है। इसके साथ ही 27 एयरपोर्ट्स 10 मई तक बंद रहेंगे। फ्लाइटराडर24 प्लेटफॉर्म के फ्लाइट ट्रैकिंग डेटा के मुताबिक, पाकिस्तान और भारत के पश्चिमी गलियारे का एयरस्पेस का ज्यादातर हिस्सा नागरिक विमानों से फ्री था। फ्लाइट को ट्रैक करने वाले पोर्टल के मुताबिक, पाकिस्तान के ऊपर हवाई क्षेत्र और जम्मू–कश्मीर एवं गुजरात के बीच भारत के पश्चिमी क्षेत्र में नागरिक हवाई यातायात नहीं था। इसकी वजह एयरलाइनों द्वारा संवेदनशील क्षेत्र से दूरी बनाए रखना है। जिन एयरपोर्ट्स को बंद रखा गया है, उनमें श्रीनगर, जम्मू, लेह, चंडीगढ़, अमृतसर, लुधियाना, पटियाला, बठिंडा, हलवारा, पठानकोट, भुंतर, शिमला, गग्गल, धर्मशाला, किशनगढ़, जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, मुंद्रा, जामनगर, राजकोट, पोरबंदर, कांडला, केशोद, भुज, ग्वालियर और हिंडन शामिल हैं। बुधवार को 300 से अधिक उड़ानों को रद्द कर दिया गया था। इस दौरान

उत्तर और पश्चिमी भारत के 21 एयरपोर्ट्स बंद थे।एयर इंडिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि उसके संपर्क केंद्रों पर वर्तमान में बहुत अधिक कॉल आ रही हैं। एयरलाइन ने कहा, "हमारे सभी प्रतिनिधि सक्रिय रूप से ग्राहकों की सहायता कर रहे हैं, कुछ मामलों में संपर्क होने में अपेक्षा से अधिक समय लग सकता है। कृपया निश्चिंत रहें, हम आपकी सहायता के लिए यहां हैं।" एयरलाइन ने कहा, "जिन ग्राहकों की उड़ानें वर्तमान व्यवधानों से प्रभावित हैं, उनके लिए एयर इंडिया कैंसिलेशन पर फुल रिफंड और रीशेड्यूलिंग पर वन–टाइम छूट की पेश-कश कर रही है।

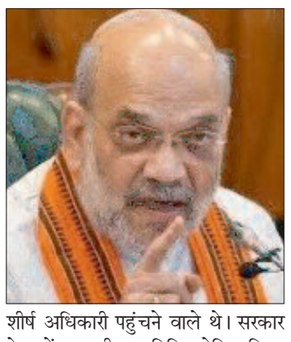

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का झारखंड दौरा टला

10 मई को प्रस्तावित पूर्वी क्षेत्रीय अंतरराज्यीय परिषद की बैठक स्थगित

रांची , रांची में 10 मई को प्रस्तावित पूर्वी क्षेत्र अंतरराज्यीय परिषद की 27वीं बैठक स्थगित कर दी गई है। यह बैठक केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में होनी थी। इसके लिए वह 9 मई को रांची पहुंचने वाले थे। आधिकारिक सूत्रों ने बैठक स्थगित होने की वजह नहीं बताई है, लेकिन यह माना जा रहा है कि भारत–पाकिस्तान के बीच जारी टकराव और तनाव की स्थिति के मद्देनजर यह फैसला लिया गया है। परिषद के सदस्य चारों राज्यों को बैठक स्थगन की सूचना दे दी गई है। बैठक की नई तारीख बाद में तय की जाएगी। इस बैठक में भाग लेने के लिए झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के मुख्यमंत्रियों के अलावा चारों राज्यों के

शीर्ष अधिकारी पहुंचने वाले थे। सरकार ने इन्हें राजकीय अतिथि घोषित किया था। बैठक में अंतरराज्यीय समन्वय, केंद्र–राज्यों के बीच परस्पर देनदारियों से संबंधित विषय, उग्रवाद उन्मूलन, परिसंपत्तियों के बंटवारे, नशीले पदार्थों के कारोबार पर नियंत्रण सहित कई मुद्दों पर विमर्श होना था।

उल्लेखनीय है कि संसद से पारित राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत देश को पांच क्षेत्रों उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी में विभाजित किया गया था तथा प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक क्षेत्रीय परिषद का गठन किया गया था। यह एक वैधानिक निकाय है, जिसके पदेन अध्यक्ष देश के गृह मंत्री होते हैं।

क्षेत्रीय परिषद में शामिल किए गए राज्यों के मुख्यमंत्री रोटेशन के आधार पर एक वर्ष की अवधि के लिए उपाध्यक्ष के रूप में दायित्व का निर्वाह करते हैं। वर्तमान में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद के उपाध्यक्ष झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन हैं।

भारत के सुदर्शन चक्रने पाक की अक्ल लगाई ठिकाने, सारे हमले चंद मिनटों में हुए विफल

नई दिल्ली , पाकिस्तान ने कल रात भारत के 15 से ज्यादा सैन्य ठिकानों पर हमले की कोशिश तो की लेकिन भारत के एस–400 डिफेंस सिस्टम ने पाक की साजिश को विफल कर दिया। भारत को नुकसान पहुंचाने के चक्कर में पाकिस्तान को अपने डिफेंस सिस्टम से हाथ गंवाने पड़े। दरअसल भारत ने लाहौर में एक वायु रक्षा प्रणाली को निष्क्रिय कर दिया। स–400 की सबसे बड़ी खासियत इसका मोबाइल होना है। यानी रोड के जरिए इसे कहीं भी लाया ले जाया जा सकता है। इसमें 92ह6श्व इलेक्ट्रॉनिकली स्टीयर्ड फेज्ड ऐरो रडार लगा हुआ है जो करीब 600 किलोमीटर की दूरी से ही मल्टीपल टारगेट्स को डिटेक्ट कर सकता है। ऑर्डर मिलने के 5 से 10 मिनट में ही ये ऑपरेशन के लिए रेडी हो जाता है।

400 एक अत्याधुनिक एयर डिफेंस सिस्टम है, जिसे रूस के एलमाज सेंट्रल डिजाइन ब्यूरो ने बनाया है। ये सिस्टम मिसाइल, ड्रोन, फाइटर जेट्स और रॉकेट लॉन्चर जैसे हवाई हमलों को रोकने में कारगर है। स400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम के एक रेजीमेंट में आठ लॉन्चर होते हैं। मतलब आठ लॉन्चिंग ट्रक और हर एक ट्रक में चार लॉन्चर होते हैं। हर लॉन्चर से चार मिसाइलें निकलती हैं।

भारत के हमले से पाकिस्तान में खौफ

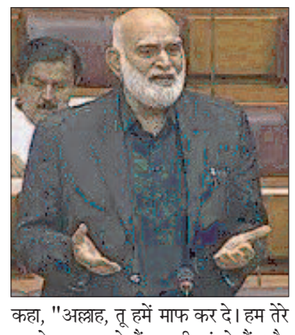

संसद में रोते हुए पूर्व मेजर बोले– अल्लाह हमारी हिफाजत करे

नई दिल्ली ,जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमले के बाद भारत के कर-रे जवाब से पाकिस्तान में दहशत का माहौल है। वहां के लोग डरे–सहमे नजर आ रहे हैं और दुआ कर रहे हैं कि वे सुरक्षित रहें। इसका उदाहरण पाकिस्तानी संसद से भी सामने आया है, जहां चर्चा के दौरान नेशनल असेंबली के सदस्य और सेना के पूर्व मेजर रो पड़े। पूर्व पाकिस्तानी मेजर ताहिर इकबाल ने नेशनल असेंबली में कहा, "हम अपनी कौम से कहते हैं कि सब मिलकर चलो और अपने रब से दुआ करो कि हम सबकी हिफाजत करें। इस मुल्क की रक्षा करें। ताहिर इकबाल ने कहा कि अल्लाह ने चाहा कि पाकिस्तान बने और उन्होंने ही इस मुल्क को बनाया है। अब वही इसकी हिफाजत करेंगे। उन्होंने रोते हुए

कहा, "अल्लाह, तू हमें माफ कर दे। हम तेरे सामने सर झुकाते हैं, माफी मांगते हैं और इसमें कोई दो राय नहीं है कि हम तेरे बड़े गुनहगार हैं।" पूर्व पाकिस्तानी मेजर ने कहा कि अल्लाह की रहमत काम आएगी। उनकी रहमत मिलेगी तो हम कामयाब होंगे और इस मुल्क की हिफाजत करेंगे। उल्लेखनीय है कि भारत ने पहलगाम आतंकवादी हमले का बदला ऑपरेशन 'सिंदूर' से लिया है। इसके तहत पाकिस्तान और पीओके में नौ आतंकवादियों के ठिकानों को तबाह कर दिया गया। भारत की सैन्य कार्रवाई में करीब 100 आतंकवादियों के मारे जाने की खबर है। हालांकि, अभी आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि नहीं की गई है। इस हमले से बौखलाए पाकिस्तान ने एलओसी से सटे सीमावर्ती इलाके में गोलाबारी की, जिसमें कई भारतीय हताहत हो गए हैं। इसके साथ ही उसने भारत में बुधवार रात कई शहरों को निशाना बनाने की कोशिश की, लेकिन भारतीय सेना ने सभी हमलों को नाकाम कर दिया और पाकिस्तानी सेना अपनी योजना में बुरी तरह विफल हो गई।

ऋषिकेश में कैफे संचालक की हत्या

– घर के बाहर बदमाशों ने सीने में उतार दी 4 गोलियां
– सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए स्कूटी सवार दो हमलावर

ऋषिकेश। ऋषिकेश के मुनिकीरेती थाना क्षेत्र अंतर्गत तपोवन में एक कैफे संचालक की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। पुलिस ने मृतक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। स्कूटी सवार दो हमलावर भी सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं। पुलिस ने मामले में जांच पड़ताल शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक नोएडा निवासी 40 वर्षीय नितिन देव का तपोवन स्थित डेक्कन वैली में फ्लैट है। देर रात नितिन अपने कैफे से फ्लैट पर वापस आ रहे थे। फ्लैट के नीचे ही दो बदमाशों ने

नितिन पर ताबड़तोड़ गोली चला दी। चार गोली लगने से नितिन की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद हमलावर मौके से फरार हो गए।

ट्रैक्टर–ट्रॉली पलटी, दो युवतियों समेत 5 की दर्दनाक मौत

बूंदी । खुशियों से भरी बारात का कारवां कब मातम में बदल जाएगा, किसी ने सोचा नहीं था। बूंदी जिले के लाखेरी रोड पर गुरुवार को एक दर्दनाक हादसे में ट्रैक्टर–ट्रॉली पलट गई, जिसमें दो युवतियों, दो महिलाओं और एक मासूम बच्ची समेत 5 लोगों की मौत हो गई, जबकि 25 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। यह हादसा गुरुवार सुबह करीब 11:30 बजे खटकड़ क्षेत्र में स्टेट हाईवे पर हुआ। ट्रैक्टर–ट्रॉली में सवार करीब 40 लोग चौतरा का खेड़ा गांव से माटुंडा गांव में बैरवा समाज के सामूहिक विवाह सम्मेलन में शामिल होने जा रहे थे। बूंदी कलेक्टर अक्षय गोदारा ने बताया कि ट्रैक्टर चालक स्टेट हाईवे पर सामने से आ रही एक बाइक को बचाने की कोशिश में ट्रॉली से संतुलन खो बैठा और वाहन पलट गया। ट्रॉली में बैठे दर्जनों लोग उसके नीचे दब गए। हादसे में 8 साल की मासूम किरण, 20 वर्षीय कृष्णा और कोमल, 35 साल की ज्योति, और 55 साल की शांति बाई की मौके पर ही मौत हो गई। सभी मृतक बैरवा समाज से ताल्लुक रखते थे और एक ही विवाह समारोह में शामिल होने जा रहे थे।

सर्वोच्च प्राथमिकता की परियोजनाओं का शीघ्र क्रियान्वयन होना जरूरी : धामी

सीएम धामी ने केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से की भेंट

जयन्त प्रतिनिधि। देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को नई दिल्ली में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से भेंट कर उत्तराखंड की अनेक महत्वपूर्ण सड़क एवं अवसंरचना परियोजनाओं के शीघ्र स्वीकृति दिए जाने का अनुरोध किया है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि हाल के वर्षों में चारधाम यात्रा के दौरान पर्यटकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होने से राज्य की सड़कों पर यातायात का दबाव बढ़ा

है। लिहाजा सड़कों की यातायात वहन क्षमता बढ़ाए जाने व समुचित रख-रखाव के साथ ही क्षेत्रीय संपर्क, पर्यटन और आर्थिक प्रगति की दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता की इन परियोजनाओं का शीघ्र क्रियान्वयन होना जरूरी है।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री से भेंट के दौरान केंद्रीय सड़क अवसंरचना निधि के अंतर्गत अवशेष 367.69 करोड़ की प्रतिपूर्ति शीघ्र राज्य सरकार को किये जाने का मामला प्रमुखता से उठाया। मुख्यमंत्री ने ऋषिकेश बाईपास परियोजना को स्वीकृति प्रदान किए जाने और बिहारीगढ़ से रोशनाबाद तक के 33 किमी. लंबे राज्य मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में अधिसूचित किये जाने का भी अनुरोध किया।

सम्पादकीय

युद्ध पर उतारू पाकिस्तान

जैसे की उम्मीद की गई थी पाकिस्तान ने एक बार फिर अपनी बौखलाहट का परिणाम भारत में बिना कारण मिसाइल बरसाकर दिया है। हालांकि पाकिस्तान को अपने इस कारनामे का अंजाम भी भुगतना पड़ा और भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के लाहौर में मिसाइल गिराकर एक संदेश दिया गया जिसे पाकिस्तान हमेशा याद रखेगा। पहलगाम में हमले के बाद पाकिस्तान मानने को तैयार ही नहीं था कि यह घटना उसकी जमीन पर पले और प्रशिक्षण लेने वाले आतंकियों द्वारा अंजाम दी गई है। पहलगाम हमले पर भारत ने जल्दबाजी न दिखाते हुए पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए मात्र 25 मिनट का एक ऐसा मिशन चलाया जिसने पाकिस्तान को उसकी औकात से अवगत करा दिया। उकसाने की पहल करते हुए बौखलाए पाकिस्तान ने भारत के उत्तरी पश्चिमी सैन्य ठिकानों पर मिसाइल से हमले करने का प्रयास किया है, लेकिन भारत की अति आधुनिक वायु रक्षा प्रणाली के तहत पाकिस्तान की मिसाइल जमीन पर गिरने से पहले ही दम तोड़ गई, जवाब में भारत में लाहौर में मिसाइल गिराई लेकिन पाकिस्तान का कोई भी यंत्र भारत की मिसाइल को निष्प्रभावी नहीं बना पाया। स्पष्ट है कि भारत चाहता तो इन मिसाइल को आबादी वाले या फिर सैन्य क्षेत्र में गिरा कर पाकिस्तान को बड़ा नुकसान पहुंचा सकता था लेकिन यह सिर्फ एक संदेश देने जैसा भर था कि शुरुआत ऐसी है तो अंजाम के लिए किस हद तक हिंदुस्तान जा सकता है, यह पाकिस्तान को समझ लेना चाहिए। असल में पहलगाम हमले के बाद जवाब में भारत द्वारा की गई कड़ी कार्रवाई के बाद से ही पाकिस्तान बौखलाया हुआ है। इधर आतंकी सरगना एवं उनके संगठन भी पाक सेना की नाकामी से खफा हैं। स्पष्ट है कि भारत ने कभी भी अपनी तरफ से युद्ध की शुरुआत नहीं की है लेकिन पाकिस्तान का भारतीय शहरों में मिसाइल गिराने का प्रयास करना सीधे तौर पर युद्ध के लिए निमंत्रण देना है। पाकिस्तान की मजबूरी है कि यदि वह आतंकी सरगनाओ को खुश करने के लिए भारत के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करता है तो इसका खामियाजा उसे अपने देश के अंदर ही भुगतना पड़ सकता है और शायद कहीं ना कहीं इसे भी भारत पर हमले करने का एक प्रमुख कारण माना जा सकता है। भारत द्वारा पहलगाम हमले के बाद आतंकी संगठनों के ठिकानों को निशाना बनाया गया है और आज स्थिति यह है कि आतंकवादियों से लेकर पूरा पाकिस्तान देश भारत के खौफ से सहमा हुआ है। आज परिस्थितियों अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पूरी तरह से भारत के पक्ष में है और यदि भारत चाहे तो इस समय एक बड़ा निर्णय लेकर भविष्य की परिस्थितियों को सुधारने की क्षमता रखता है। हालांकि भारत की मंशा हमेशा से ही "मानवीय" रही है, लेकिन यदि किसी दुश्मन के कारण अपने ही देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा पर संकट आने लगे तो फिर कुछ पहलुओं को नजरअंदाज करना ही पड़ता है। ठीक यही स्थिति इस समय भारत के साथ है जिसे पड़ोसी देश जबरन उकसाने का प्रयास कर रहा है लेकिन उसे यह समझ लेना चाहिए की धैर्य की भी एक सीमा होती है और यदि भारत धैर्य टूट गया तो फिर पहले से ही भुखमरी और बुरे हालातो से गुजरने वाले पाकिस्तान के लिए परिस्थिति विनाशकारी साबित हो सकती हैं। इस बार भी भारत ने अपनी ओर से कोई शुरुआत न करते हुए केवल अपने नागरिकों की निर्मम हत्या के बदले आतंकियों के विरुद्ध करवाई की है लेकिन यह भी ध्यान रखा कि कोई नागरिक ना मारा जाए। "ऑपरेशन सिंदूर" में जो मारे गए वह सभी आतंकवादी थे और इनका मर जाना उन परिवारों को न्याय दिलाना था जिनके अपने पहलगाम हमले में धर्म पूछ कर मारे गए थे।

पहलगाम की घटना से सदमे में घाटी में लोगों

हरिशंकर व्यास

कश्मीर घाटी और कश्मीरियों का बदलना आंखों देखा है। साक्षात आज सामने है! क्या किसी ने सपने में कभी सोचा कि पुराने श्रीनगर, डाउनटाऊन श्रीनगर में आतंकी घटना के विरोध में लोग दुकानें बंद रखेंगे! पर वैसा हुआ। कश्मीर में बंद रहा। लाल चौक में बंद और प्रदर्शन हुआ। घाटी में लोग यह खबर सुन सदमे में थे कि पहलगाम में आतंकियों ने पर्यटकों को मारा है!

खुद पहलगाम में अगले दिन मुख्य सड़क पर लोगों ने घटना के खिलाफ बड़ी संख्या में प्रर्दशन किया! कोई आश्चर्य नहीं जो कश्मीरियों की इस प्रतिक्रिया से वह संगठन भी घबरा गया, जिसने छूटते ही हमले की जिम्मेवारी ली थी।

घाटी से भाग कर आए पर्यटकों ने लाइव बताया है कि हमले के बाद कश्मीरियों, मुसलमानों ने उनकी हर संभव मदद की। इंसानियत दिखलाई। बेरूखी, नफरत की बजाय दुख, पीड़ा और हमदर्दी की संवेदना में माना कि बहुत बुरा हुआ! ऐसे ही श्रीनगर के अखबारों, मीडिया ने घटना की निंदा और भर्त्सना में कमी नहीं दिखाई।

क्या यह धंधा चौपट होने के स्वार्थ में था? या प्रशासन-सरकार के दबाव में था? ऐसा यदि कुछ मानें भी तो पुराने श्रीनगर में दुकानों का शटडाउन होना, जामा मस्जिद में जुमे की नमाज में मीर वाइज का एक मिनट का मौन रखवाना और आतंकी हमले की भर्त्सना के क्या अर्थ हैं? मेरे लिए, शेष भारत के लिए यह सब अविश्वसनीय सा है।

दरअसल घाटी और घाटी के मुसलमानों की नीयत के साथ इस्लाम को ले कर हममें जैसी जो धारणा पैठी हुई है उसमें यह मानना, समझना आसान नहीं है कि जिंदगी की जरूरत भी जीना बदलवा सकती है। आबोहवा बदलवा सकती है।

घाटी व कश्मीरियों का बड़ा सत्य यह अनुभव है जो अनुच्छेद 370 हटने के बाद उन्होंने कुछ नया फील किया। लोगों की मनोदशा में, नई पीढ़ी, लड़के-लड़कियों, महिलाओं और उस पीढ़ी ने यह महसूस किया कि कुछ भी हो, अमन से सुकून की जिंदगी है। अमन है तो जिंदगी न केवल सामान्य और सहज होती है, बल्कि कमाई चौतरफा बढ़ती है।

आबोहवा बदलती है। शहर बदलता है। श्रीनगर, स्मार्ट सिटी होता है। घाटी की पैदावार की बिक्री से लेकर शिक्षा, परिवहन सबमें बेहतरी मुमकिन है। पर्यटकों का सैलाब आ सकता है। रोजगार और कमाई के अवसर बढ़ सकते हैं।

मेरा मानना है कि 1987 के धांधली वाले विधानसभा चुनावों से घाटी की बरबादी के शुरू सफर से बनी कश्मीरी इमेज में नया मोड़ बनवाने वाली तारीख पांच अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 का हटना था। अब दूसरा मोड़ 22 अप्रैल 2025 को कश्मीरियों की प्रतिक्रिया का है। पहलगाम की घटना ने कश्मीरियों में जुगुप्सा, आतंकियों के प्रति तटस्थता, नाराजगी या गुस्सा या असहमति कुछ भी बनाई हो वह अनहोनी बात है। और इसे गहराई से समझने की जरूरत है। उसी अनुसार सरकार और प्रशासन को घाटी में लोगों को संभालना, हैंडल करना चाहिए।

पाकिस्तान से हमारी दुश्मनी, हिंदू बनाम मुस्लिम की राजनीति अपनी जगह चाहे जो पाले रखें लेकिन इसके तनाव और लड़ाई में घाटी की जमीनी मनोदशा को न समझना, उसकी केयर न करना, उसे पाकिस्तानी मनोदशा का मानना ढाक में तीन पात वाली स्थिति लौटाने वाली गलती होगी।बेसिक दिक्कत मेरे, आपके और शेष भारत की घाटी और कश्मीरियों के प्रति बनी हुई धारणा और दिमाग में पैठी इमेज की है। यह अविश्वास है कि न कश्मीर बदला है और न कश्मीरी बदल

सकते हैं। और अविश्वास का ताजा, खतरनाक बिंदु तब दिखा जब गृह मंत्री अमित शाह ने श्रीनगर में सुरक्षा संबंधी बैठक में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को नहीं बैठाया! भला क्यों? क्या अब्दुल्ला और उनका परिवार भरोसेमंद नहीं है? क्या वे महज दिखावे के मुख्यमंत्री हैं? क्या वे आतंकियों के भेदिए, पाकिस्तानी एजेंट या अलगाववादी हैं?

स्वतंत्र भारत का दुर्भाग्य है, गंवारपने और मूर्खताओं की इंतहां है जो आईबी, रॉ जैसी खुफिया एजेंसियों से देश का प्रधानमंत्री हो या गृह मंत्री या गृह मंत्रालय के कश्मीर डेस्क के अफसर असुरक्षाओं में ऐसे जीते हैं कि एक आईबी चीफ बीएन मलिक ने पंडित नेहरू के कान भर कर शेख अब्दुल्ला को बरखास्त करवाया तो 1984 में आईबी चीफ एमके नारायणन ने फारूक अब्दुल्ला को बरखास्त करवाया।वही 2014 से मोदी सरकार को खुफिया प्रमुख अजित डोवाल घाटी के अब्दुल्ला और मेहबूबा को उसी निगाह, उसी समझ, उसी मनोवृत्त में समझाते हैं, जैसे उनके पूर्ववर्ती एमके नारायणन या बीएन मलिक समझाते थे।

दूसरे शब्दों में 1947 में भारत ने घाटी में जितने प्रयोग (सोचें, वीपी सिंह के समय मुफ्ती मोहम्मद देश के गृह मंत्री थे तो अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में उमर अब्दुल्ला केंद्रीय मंत्री) किए हैं उस सबके अंत में ऐसी की तैसी दिल्ली की खुफियाई एजेंसियों द्वारा सत्तावान नेताओं के कान भरने, नेताओं को असुरक्षित बनाने, उनमें अविश्वास बनवाने तथा जमीनी लापरवाही व ढिलाई से बरबाद हुए हैं।

बेसिक बात है कि अगस्त 2019 के बाद घाटी में वह हुआ जो घाटी के लोगों ने पर्यटकों को नए-नए इलाकों में घूमाने का सिलसिला बनवाया। एक जानकार के अनुसार पर्यटकों के सैलाब से पहलगाम इलाके में चार सौ नई प्रॉपर्टी का निर्माण हो रहा है! भीड़ के कारण ही टूरिस्ट ऑपरेटरों या होटल वालों ने पहलगाम के अगल-बगल की छोटी घाटियों में पर्यटकों को घुमाना शुरू किया।

क्या यह बात आईबी, रॉ, सेना, बीएसएफ, पुलिस या तमाम खुफिया एजेंसियों को नहीं जाना हुआ होना था? पर किसी को पता नहीं था! और आतंकी मजे से बैसरन घाटी में आए और पर्यटकों को मारा।

मेरा मानना है कि शेष भारत के पर्यटकों को समझ आया कि कश्मीर बदल गया है, घूमने लायक हो गया है। एयरलाइंस, होटल मालिकों, कश्मीरियों को भी समझ आया कि बदले कश्मीर के अवसरों को भुनाओ मगर भारत की खुफिया एजेंसियों को समझ नहीं आया! अफसरों को समझ नहीं आया कि कश्मीर नया होता हुआ है तो उसको नई जिम्मेवारी, नई समझदारी और नएपन के साथ संभाला जाए! ज्यादा चौकस हुआ जाए। पाकिस्तानी घुसपैठियों, आतंकियों पर अधिक सख्त नजर रहे!

नए कश्मीर की पहली निर्वाचित सरकार और प्रादेशिक पार्टियों को भरोसे में ले कर उन्हें मोटिविट करें ताकि वे अपने कार्यकर्ताओं से घर-घर संपर्क रखें। राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नेटवर्क और प्रशासनिक कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों तथा उनके मुखबिरों से सूचना लेने-देने का नया तंत्र बने। कश्मीर को किसी भी तरह का कोई अप्रत्याशित सदमा नहीं लगना चाहिए।

मगर ऐसी सोच ही नहीं थी। और मेरा मानना है कि वजह हमारा अविश्वास है कि न कश्मीरी बदल सकते हैं और न कश्मीर बदला है! आखिर क्यों कर ऐसा मेरा मानना है? दरअसल फरवरी में 'ब्लूम्सबरीइ ने कश्मीर पर संभवतया पहली और अकेली एक भव्य कॉफी बुक 'रीइमैजिनिंग जम्मू एंड कश्मीरः अ पिक्टोरियल जर्नी प्रकाशित की है।

इसका शीर्षक मेरे लिए और दिल्ली के आईआईसी अड्डे के अपने करीबी सुधीजनों के लिए भी सवाल पैदा करने वाला था। हमारा आशीष से सवाल था कि जो इलाका दशकों से हिंसा, भारत विरोध और खौफ की दिल-दिमाग में तस्वीर बनाए हुए है उसकी भला कैसे नई कल्पना कर सकते हैं? उसे कैसे बदला हुआ मानें? एक अंग्रेजीदां कला आलोचक ने अंग्रेजी में तल्खी से कहा, क्या बेहूदा बात, कश्मीर 'रीइमैजिनिंगइ कैसे हो सकता है! वह तो खौफ में जीता हुआ है, दबिश में है। जोर-जबरदस्ती की दास्तां है!

यही देश और दिल्ली के बौद्धिकों, विदेशियों की भी आम राय है। तब विचार सकते हैं लुटियन दिल्ली की नौकरशाही में भी क्या बेसिक सोच होगी? जबकि आशीष की दलील है कि, 'मेरा बचपन, मेरी पढ़ाई उसी लाल चौक में हुई है जो खौफ का एपीसेंटर था! मैंने बम फूटते देखे हैं, बगल में आतंकियों द्वारा संपादक को गोली मारते देखा है।

और मैं फोटोग्राफर हूं तो मेरी आंखों देखी यादों में 2019 से पहले का लाल चौक है व घाटी है तो उसके बाद जो देखा है, जो शूट किया है वह मेरे लिए भी अकल्पनीय था और है। इसलिए तस्वीरें अब नया कश्मीर बताते हुए हैं तो वह मेरे लिए, सबके लिए 'रीइमैजिनिंगइ ही हैइ! निश्चित ही इस कॉफी बुक में घाटी के जनजीवन, माहौल की नई फील के फोटो अद्भुत हैं। उनसे अपने आप विश्वास होता है कि घाटी कल्पना से अधिक नया हुआ है! सो उसे नजर लगनी ही थी। तभी आतंकियों ने पहली बार पर्यटकों को मारा!

इसलिए 'रीइमैजिनिंगइ और कॉफी बुक सुकून भरे अद्भुत कश्मीर का दस्तावेज है तो उसको अब कश्मीरियों के लाइव चेहरे से जुबां भी मिलती हुई है। आतंकी घटना के बाद लाल चौक, श्रीनगर और घाटी में लोगों के लाइव चेहरों से अपने आप अहसास होता हुआ है कि वे पहलगाम की घटना से सदमे में हैं, हताश और निराश हैं।

असली लड़ाई जाति की नहीं धर्म की

हरिशंकर व्यास

पाकिस्तानी सेना के प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने हिंदू-मुस्लिम का जो राग छेड़ा और उसके बाद जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान के आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर हिंदुओं का जैसा नरसंहार किया उससे भारत की राजनीति बड़े पैमाने पर प्रभावित हो सकती है। भारत में पिछले कुछ समय से राजनीति बदली थी। लोकसभा चुनाव में संविधान और आरक्षण बचाने की लड़ाई कारगर साबित हुई थी। भाजपा की मंदिर और धर्म के एजेंडे के बरक्स विपक्षी पार्टियों ने अपना गठबंधन बनाया था और अपना एजेंडा आगे किया था। वह एजेंडा धर्म की राजनीति को फेल करने वाला था।

उसमें जाति आधारित जनगणना की मांग थी। आबादी के अनुपात में आरक्षण बढ़ाने का वादा था और संविधान बचाने का संकल्प था। भाजपा के कई नेताओं ने चार सीट जीतने और उसके बाद संविधान बदलने की जो बात कही थी उसका मुद्दा भी था। एक तरफ भाजपा अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन की हवा पर सवार थी और उसको लग रहा था कि यह मुद्दा हिंदुओं को पहले से ज्यादा एकजुट कर देगा लेकिन उसके मुकाबले जाति का मुद्दा ज्यादा प्रभावी हो गया। भाजपा ने अपनी जीती हुई 63 सीटें गंवा दी। सहयोगियों की स्थिति भी अच्छी नहीं रही। लोकसभा के इस नतीजे के बाद हालांकि राज्यों के चुनाव में सब कुछ बदल गया और भाजपा ने ज्यादातर राज्यों में चुनाव जीत लिए। लेकिन उन राज्यों में भी भाजपा की जीत धर्म की बजाय जातिगत गणित बैठाने से हुई। तभी भाजपा किसी ऐसे मौके की तलाश में थी, जिससे विपक्षी पार्टियों की जाति की राजनीति की काट हो सके। वह मौका मिला है मुनीर के दो राष्ट्र के सिद्धांत वाले भाषण और उसके बाद पहलगाम में हुए हिंदुओं के नरसंहार से। धर्म पूछ कर हिंदू पुरुषों को गोली मार देने और महिलाओं से कथित तौर पर यह कहने कि, 'जाओ जाकर मोदी को बता दो', देश की राजनीति में बदलाव आ सकता है। इससे यह धारणा बन रही है कि असली लड़ाई जाति की नहीं धर्म की है और सभी हिंदुओं को एकजुट रहने की जरुरत है। दूसरी धारणा यह बन रही है कि धर्म रक्षा की यह लड़ाई मोदी लड़ रहे हैं। यह स्थिति भाजपा के बहुत अनुकूल होती दिख रही है। पहलगाम की घटना के तुरंत बाद हिंदुवादी संगठनों की प्रतिक्रिया इसी लाइन पर थी। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के मुखपत्र 'पांचजन्य' के सोशल मीडिया अकाउंट से एक पोस्ट की गई, जिसमें लिखा गया था, 'उन्होंने धर्म पूछा, जाति नहीं'। उसके बाद से सोशल मीडिया में यह नैरेटिव चल रहा है कि आतंकवादियों ने हिंदुओं को मारा। उन्होंने यह नहीं पूछा कि हिंदुओं में कौन किस जाति का है। इसलिए हिंदुओं को भी जाति से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए। यह रिपोर्ट भी आई कि असम के एक प्रोफेसर को 'कलमा' पढ़ना आता था और उसने आतंकवादियों के कहने पर कलमा पढ़ दिया तो उसकी जान बच गई। तभी भाजपा के एक सांसद ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर 'कलमा' लिख कर डाला और कहा कि इसे याद कर रहे हैं, पता नहीं कहां पढना पड़ जाए। हालांकि इसके लिए कई लोगों ने उनकी आलोचना की और कहा कि उनको अपनी ही सरकार पर भरोसा नहीं है कि वह सुरक्षा सुनिश्चित कर सकती है। लेकिन यह मामला सुरक्षा का नहीं है, बल्कि राजनीतिक नैरेटिव का है। इसी नैरेटिव के तहत अब यह प्रचार किया जा रहा है कि आतंकवाद का धर्म होता है।

राहुल गांधी को फटकार

न्यायपालिका से अपेक्षा उदात्त अंतरराष्ट्रीय प्रतिमानों के अनुरूप व्यवस्था देने की होती है, ताकि समाज उत्तरोत्तर लोकतांत्रिक होने की ओर अग्रसर हो सके। उससे अपेक्षा उसूलों की संकुचित परिभाषा करने की कोशिशों पर रोक लगाने की होती है। विनायक दामोदर सावरकर के लिए कथित अपमानजनक टिप्पणी के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को फटकार लगाते हुए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो दायरा तय किया है, वह परेशानी का शबब है। इसलिए नहीं कि कांग्रेस नेता ने जो टिप्पणी भारत जोड़ो यात्रा के दौरान की थी, वह उचित है। उस बारे में अंतिम निर्णय तो अभी न्यायालय में विचाराधीन है। मगर न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति मनमोहन ने जो कहा, उसका अर्थ है कि स्वतंत्रता सेनानी आलोचना से ऊपर है, भले उनके कुल योगदान के बारे में कुछ असहज करने वाले तथ्य या उनकी भूमिका के बारे में असहमत विश्लेषण मौजूद हों। खुद सर्वोच्च न्यायालय अतीत में कई विवादास्पद किताबों, फिल्मों और बयानों के सही या गलत होने संबंधी राय जताए बिना यह व्यवस्था दे चुका है कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के व्यापक दायरे में आता है। लेकिन अब उसने जो कहा है, उससे यह दायरा संकुचित हुआ है। इससे उस विवेकहीनता को बल मिलेगा, जो देश के राजनीतिक विमर्श पर हावी होता गया है। इससे उस माहौल को तर्क मिलेगा, जिसे फैलाने में तमाम राजनेताओं ने भूमिका निभाई है। इसकी मिसाल कुछ महीने पहले देखने को मिली, जब डॉ. अंबेडकर के बारे में गृह मंत्री अमित शाह की एक साधारण-सी टिप्पणी को लेकर विपक्ष ने कई दिन तक संसद नहीं चलने दी। उस टिप्पणी से अंबेडकर का अपमान हुआ है और इसके लिए शाह को माफी मांगनी होगी, यह तर्क देने वालों में तब राहुल गांधी भी थे। इस बिंदु पर यह रेखांकित करने की जरूरत है कि मान-अपमान और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मुद्दों पर नजरिया अलग-अलग पक्षों की सुविधा के अनुसार तय नहीं हो सकता।

भूल चूक माफ का गाना टिंग लिंग सजना जारी

डांसर-कोरियोग्राफर धनश्री वर्मा ने हाल ही में अपने सभी फैंस को चौंका दिया है। भूल चूक माफ फिल्म के निर्माताओं ने फिल्म का एक नया गाना रिलीज किया है, जिसमें धनश्री वर्मा ने अपने डांस स्टेप्स से सबको दीवाना बना लिया है। आइए जानते हैं किस गाने में धनश्री ने मचाई धूम। राजुकमार राव और वामिका गब्बी अभिनीत फिल्म भूल चूक माफ फिल्म का चौथा गाना रिलीज हुआ है। इस गाने का नाम है टिंग लिंग सजना। इस आइटम सॉन्ग में धनश्री वर्मा शानदार ठुमके लगाती नजर आ रही हैं। गाने की शुरुआत अभिनेता राजकुमार राव से होती है, जिसमें वह बैचलर सरप्राइज पार्टी का आनंद उठाने जाते हैं। इसके बाद धनश्री की गाने में धमाकेदार एंट्री होती है, जिसमें वह लाल रंग के स्लीवलेस ड्रेस पहने नजर आ रही हैं। उनके डांस मूव्स ने वहां मौजूद सभी को अपनी दीवाना बना लिया। इस गाने में तनिष्क बागची और मधुवंती

बागची ने अपनी आवाज दी है, वहीं बात करें लीरिक्स तो इसे इरशाद कामिल ने लिखा है। करण शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म भूल चूक माफ 09 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म में राजकुमार राव और वामिका गब्बी के अलावा सीमा पाहवा अहम किरदार में हैं। इस रोमांटिक कॉमेडी फिल्म का दर्शकों को बड़ी बेसब्री से इंतजार है। हाल ही में डांसर धनश्री वर्मा भारतीय क्रिकेटर युजवेंद्र चहल से तलाक को लेकर चर्चा में थीं।

जैकलीन फर्नांडिस की है जुनून का ट्रेलर जारी, 16 मई से जियो हॉटस्टार पर होगी स्ट्रीम

पिछली बार अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडिस फिल्म फतेह में सोनू सूद के साथ नजर आई थी, जिसमें उनके काम को काफी सराहा गया। हालांकि, यह बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी। इन दिनों जैकलीन अपनी वेब सीरीज है जुनून को लेकर चर्चा में हैं। इसमें उनकी जोड़ी पहली बार नील नितिन मुकेश के साथ बनी है। अब निर्माताओं ने है जुनूनः ड्रीम, डेयर, डोमिनेट का ट्रेलर जारी कर दिया है, जिसे प्रशंसक काफी पसंद कर रहे हैं। है जुनून एक म्यूजिकल ड्रामा सीरीज है, जो मुंबई के प्रतिष्ठित एंडर्सन कॉलेज की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह कहानी न सिर्फ संगीत और सुरों की दुनिया की झलक दिखाती है, बल्कि उस संघर्ष, प्रतिस्पर्धा को भी सामने लाती है, जिससे आज की युवा पीढ़ी गुजरती है। इसमें सुमेध मुद्गलकर, सिद्धार्थ निगम, युक्ति थरेजा, प्रियांक शर्मा समेत कई युवा कलाकार अहम भूमिकाओं में दिखेंगे। है जुनून का प्रीमियर 16 मई, 2025 से ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर रिलीज होगी।

रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट में 5 अद्भुत रिकॉर्ड्स, जिन्हें तोड़ पाना असंभव

नई दिल्ली, भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने अचानक बुधवार को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी है. रोहित ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर अपने संन्यास की जानकारी दी है. हिटमैन ने 67 मैचों की 116 पारियों में 12 शतक और 18 अर्धशतकों के साथ 4301 रन बनाए हैं. उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 2 विकेट भी हासिल किए हैं. आज उनके टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कहने के मौके पर हम आपको उनके 5 अद्भुत रिकॉर्ड्स के बारे में बताने वाले हैं.भारत के लिए रोहित शर्मा ने अपना टेस्ट डेब्यू 6 नवंबर 2013 को किया था. उन्होंने अपने टेस्ट डेब्यू पर सेंचुरी लगाई थी. वेस्टइंडीज के खिलाफ कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम पर उन्होंने 301 गेंदों में 177 रनों की शानदार पारी खेली थी. इस पारी के दौरान उन्होंने 23 चौके और 1 छक्का लगाया था. इस मैच को टीम

इंडिया ने एक पारी और 51 रनों से जीत लिया.रोहित शर्मा ने साल 2019 में कमाल कर दिखाया जब उन्होंने एक मैच की दोनों पारियों में शतक लगाया. दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ विशाखापट्टनम में खेले मैच में रोहित शर्मा ने पहली पारी में 176 और दूसरी पारी में 127 रन बनाए थे. भारत के लिए वो एक मैच की दोनों पारियों में शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए. भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा के नाम टेस्ट क्रिकेट में एक और अद्भुत रिकॉर्ड दर्ज है. वो भारत की ओर से 7वें विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी बनाने वाले खिलाड़ी है. उन्होंने भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के साथ मिलकर 435 गेंदों में 280 रनों की साझेदारी की थी. रोहित ने ये कारनामा वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने डेब्यू टेस्ट मैच में किया था. रोहित शर्मा ने टेस्ट क्रिकेट में लगातार 5 मैचों में 50 रनों का आंकड़ा पार करने का रिकॉर्ड भी बनाया है. उन्होंने 2016 में न्यूजीलैंड के खिलाफ कानपुर टेस्ट की दूसरी पारी में नाबाद 68, कोलकाता में दूसरी पारी के दौरान 82, इंदौर में पहली पारी में नाबाद 51, 2017 में श्रीलंका के खिलाफ नागपुर में नाबाद 102 और दिल्ली में पहली पारी में 65 और दूसरी पारी में नाबाद 50 रन की पारी खेली थी. रोहित शर्मा टेस्ट क्रिकेट में भारत के लिए सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले दूसरे बल्लेबाज होने का रिकॉर्ड रखते हैं.

तमन्ना भाटिया ने रेड ड्रेस में शेयर किया फोटोशूट

साउथ और बॉलीवुड की टॉप अभिनेत्रियों में से एक तमन्ना भाटिया के लाखों लोग दीवाने हैं। साउथ फिल्मों में शोहरत पाने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में भी अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरा। वह सोशल मीडिया के जरिए फैंस से जुड़ी रहती हैं। इस कड़ी में उन्होंने अपना लेटेस्ट फोटोशूट शेयर किया, जो अब इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। इंस्टाग्राम पर शेयर किए गए लेटेस्ट फोटोशूट में तमन्ना भाटिया रेड कलर की ड्रेस में नजर आ रही हैं। इस ड्रेस के साथ उन्होंने अपने बालों को खुला छोड़ा है और पैरों में हाई हील्स पहनी हैं। फैंस उनकी इस अदाओं पर कायल हो रहे हैं। उनका यह फोटोशूट वायरल हो रहा है। इस फोटोशूट को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में रेड

रोजेस के इमोजी का इस्तेमाल किया। इन तस्वीरों को फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। एक फैन ने लिखा- मनमोहक, दूसरे फैन ने लिखा- चांद की तरह चमक रही हो, अन्य फैन ने लिखा- रेड ब्यूटी क्वीन।

तमन्ना ने महज 15 साल की उम्र में एक्टिंग क्षेत्र में कदम रखा और फिल्म चांद सा रोशन चेहरा में काम किया। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही,

अजिंक्य रहाणे ने रचा इतिहास, आईपीएल में 5000 रन बनाने वाले भारत के छठे बल्लेबाज बन

कोलकाता, अजिंक्य रहाणे ने कोलकाता नाइट राइडर्स और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेले जा रहे आईपीएल 2025 के 57वें मैच में इतिहास रचते हुए एक खास उपलब्धि हासिल कर ली है. कोलकाता के ईडन गार्डन्स क्रिकेट स्टेडियम में रहाणे ने आईपीएल इतिहास में अपने 5000 रन पूरे कर लिए हैं. अजिंक्य रहाणे ने चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ 31 रन बनाते ही इंडियन प्रीमियर लीग में अपने 5000 रन पूरे कर लिए. इस मैच से पहले उन्होंने 96 आईपीएल मैचों में कुल 4969 रन बनाए हैं. अब वो आईपीएल में 5000 रन बनाने वाले भारत के छठे बल्लेबाज बन

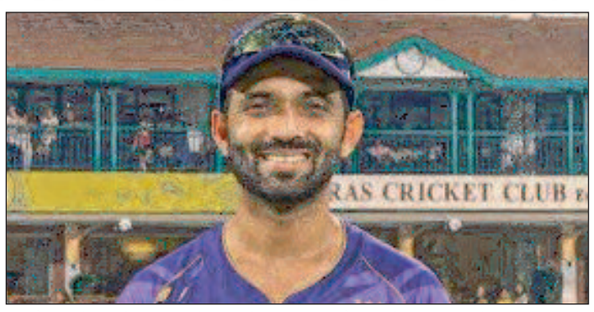

गए हैं. उनसे पहले विराट कोहली, रोहित शर्मा, शिखर धवन, सुरेश रैना और महेंद्र सिंह धोनी 5000 के आंकड़े को पार कर पाए हैं. इसके साथ ही वो आईपीएल में 5000 रन बनाने वाले ओवरऑल बल्लेबाजों की लिस्ट में 9वें स्थान पर आ गए हैं.इस मैच में केकेआर के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने टॉस जीता और चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को पहले बॉलिंग करने के लिए कहा. केकेआर ने पहले बल्लेबाजी करने हुए 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 179 रन बनाए. केकेआर के कप्तान रहाणे ने 33 बॉल में 4 चौके और 2 छक्कों के साथ 44 रनों की पारी खेली. उनके अलावा सुनील नारायण ने 26, मनीष पांडे ने नाबाद 36 और आंद्रे रसेल ने 38 रन बनाए. चेन्नई सुपर किंग्स के लिए नूर अहमद ने 4 और रविंद्र जडेजा व अंशुल काम्बोज ने 1-1 विकेट अपने नाम किया .

एक नजर

29 दिन बाद भी लापता हैं शिक्षक सुनील रावत, धरने की चेतावनी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : लापता चल रहे शिक्षक सुनील रावत का पता नहीं चलने पर आक्रोशित उत्तराखंड राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ ने धरने की चेतावनी दी है। कहा कि पुलिस 29 दिन बाद भी शिक्षक की तलाश नहीं कर पाई है। यदि एक सप्ताह के भीतर शिक्षक की तलाश नहीं की गई तो शिक्षक संघ धुमाकोट तहसील में एक दिवसीय धरना देगा। इस संबंध में शिक्षक संघ ने उपजिलाधिकारी के मध्यम से जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजा। संगठन के अध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह नेगी ने कहा कि सुनील रावत नैनीडांडा के राजकीय प्राथमिक विद्यालय चैबाड़ा में कार्यरत है। 11 अप्रैल को वह कोटद्वार से लापता हो गए हैं। जिसकी गुमशुदा की रिपोर्ट 12 अप्रैल को कोटद्वार थाने में दर्ज करवा दी थी। इस संदर्भ में संगठन की तरफ से भी थाना धुमाकोट में 13 अप्रैल को सूचित कर दिया था। कहा कि शिक्षक का कोई पता नहीं चलने से उनका परिवार परेशान हो रहा है। पुलिस शिक्षक की तलाशी में लापरवाही दिखा रही है। निर्णय लिया गया कि शिक्षक की तलाश नहीं होने पर शिक्षक संघ धरना करेगा।

जन्मदिन पर रवींद्र नाथ टैगोर को किया याद

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : जानकी नगर स्थित हेमनदास सरस्वती शिशु मंदिर में रवींद्र नाथ टैगोर के जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को रवींद्र नाथ टैगोर के बारे में जानकारी दी गई। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानाचार्य प्रदीप नौटियाल ने बच्चों को रवींद्रनाथ टैगोर के बारे में जानकारी दी। बच्चों ने भी उनके संबंधित प्रेरक प्रसंग व उनसे संबधित कविताएं सुनाई। शिक्षक मनोज जोशी ने प्रोजेक्टर के माध्यम से रवींद्र नाथ टैगोर का संपूर्ण जीवन चरित्र को दिखाया। विद्यालय के शिक्षक प्रयाग चमोली ने रवींद्रनाथ टैगोर के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि वे बंगाली कवि, लेखक व गीतकार थे। वर्ष 1913 में इन्हें गीतांजलि पुस्तक पर नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने शांति निकेतन स्थापना की जो अब विश्व भारती के नाम से प्रसिद्ध है। शिक्षक अंचल कुमार अग्रवाल ने कहा कि रवींद्र नाथ टैगोर पहले भारतीय रहे, जिनको नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन्होंने चोखेर बाली, काबुलीवाला सहित अनेक पुस्तकें लिखी। इस मौके पर योगेश नेगी, सुनीता पंत, कीर्ति द्विवेदी, श्रेया चौधरी, दीक्षा, पूजा चतुर्वेदी, हेमा पांडे मौजूद रहे।

मनोज तोपाल बनें अध्यक्ष

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : पैडुल में कैलापीर मंदिर समिति का सर्व सम्मति से गठन किया गया। गुरूवार को आयोजित बैठक में मनोज सिंह तोपाल को अध्यक्ष, जितेंद्र सिंह को उपाध्यक्ष, राजेंद्र सिंह रावत को सचिव व सुरेंद्र सिंह नेगी को कोषाध्यक्ष चुना गया। समिति में राजेंद्र सिंह तोपाल व अमर सिंह बिष्ट को संरक्षक, परमेंद्र तोपाल व राजेश रावत को सदस्य चुना गया।

नुकसान की भरपाई ठेकेदार से की जाएं

श्रीनगर गढ़वाल : विकासखण्ड कीर्तिनगर के अन्तर्गत बन रहे ककड़पाली से सौड़ पिपलीधार मोटर मार्ग में अवैध खनन व अनिमियताओं को लेकर प्रधान संगठन कीर्तिनगर ने उपजिलाधिकारी को ज्ञापन प्रेषित किया। ज्ञापन में प्रशासक सुनय कुकशाल ने कहा कि ककड़पाली से सौड़ पिपलीधार मोटर मार्ग में सड़क चौड़ीकरण का कार्य चल रहा है, जिसमें ठेकेदारों द्वारा अवैध खनन किया जा रहा है। उन्होंने उपजिलाधिकारी कीर्तिनगर से मोटर मार्ग पर बरती जला रही अनियमितताओं पर लगाम और वन संपदा को पहुंचे नुकसान की भरपाई ठेकेदार से करवाए जाने की मांग की है। (एजेंसी)

विजय कप्रवान का किया भव्य स्वागत

श्रीनगर गढ़वाल : बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति में उपाध्यक्ष नियुक्त हुए विजय कप्रवाण के श्रीनगर पहुंचने पर श्रीनगर मंडल के भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष कमल किशोर रावत ने कहा कि बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति में उपाध्यक्ष बनें विजय कप्रवान ने पौड़ी जिले का प्रभारी रहते हुए संगठन को एकजुट करने का काम किया है। मंदिर समिति के नवनियुक्त उपाध्यक्ष विजय कप्रवान ने कहा कि पौड़ी जिला प्रभारी रहते हुए भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का अपार समर्थन उन्हें मिला है। कप्रवान ने शीर्ष नेतृत्व का आभार जताते हुए सभी श्रद्धालुओं की यात्रा मंगल होने की कामना की। इस मौके पर श्रीनगर मंडल अध्यक्ष विनय घिल्डियाल, जिला महामंत्री गिरीश पैन्यूली ,सुधीर जोशी, विनीत पोस्ती, जितेंद्र धिरवान, वासुदेव कंडारी आदि मौजूद रहे। (एजेंसी)

कमजोर पुलिया पर दौड़ रहे वाहन, हादसों का अंदेशा

कोटद्वार-दुगड्डा के मध्य आमसौड़ के समीप क्षतिग्रस्त पुलिया पर आवागमन रोकने के लिए एकत्र मिट्टी

कोटद्वार-दुगड्डा के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग पर बनी है समस्या

हादसों का बना है अंदेशा

राष्ट्रीय राजमार्ग पर संकरी पुलिया पर दोनों ओर से आवागमन कर रहे वाहनों के कारण हर समय दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है। कुछ दिन पूर्व बाइक सवार को बचाने के चक्कर में एक रोडवेज की बस पुलिया से नीचे गिरते-गिरते बच गई थी। ऐसे में वर्तमान में पर्यटक सीजन भी शुरू हो चुका है। बावजूद इसके अब तक पुलिया मरम्मत की सुध नहीं ली गई। पुलिया के समीप आवागमन के लिए पर्याप्त मार्ग नहीं मिलने से जाम की समस्या भी बनी रहती है।

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सरकारी सिस्टम के लिए जनता की जान की कोई कीमत नहीं है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कोटद्वार-दुगड्डा के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग पर देखने को मिल रहा है, जहां बरसाती रपटे पर आवागमन के लिए बनी दो पुलिया में से एक पुलिया क्षतिग्रस्त पड़ी हुई है। नतीजा, क्षतिग्रस्त पुलिया के समीप स्थित दूसरी पुलिया से ही वाहनों का संचालन हो रहा है। कमजोर स्थिति में खड़ी यह पुलिया भी कब क्षतिग्रस्त हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। जबकि, उक्त पुलिया की क्षमता निर्धारित है। यदि यह पुलिया भी टूटी गई तो कोटद्वार से पहाड़ का संपर्क राष्ट्रीय राजमार्ग से कट जाएगा। चौंकाने वाले बात तो यह है कि पुलिया को क्षतिग्रस्त हुए दो वर्ष से आधिक का समय हो चुका है और अब तक इसकी मरम्मत की सुध नहीं ली गई। आमसौड़ से करीब एक किलोमीटर पहले बरसाती रपटे पर दोनों ओर से आवागमन करने वाले वाहनों के लिए दो पुलिया का निर्माण करवाया गया था। लेकिन, दो वर्ष पूर्व वर्षाकाल के दौरान एक पुलिया क्षतिग्रस्त हो गई थी। पुलिया का पिल्लर जमीन से खिसकने लगा था। सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग ने पुलिया के दोनों ओर मिट्टी एकत्रित कर इस पर आवागमन रुकवा दिया था। इसके बाद उसी के समीप बनी एक अन्य पुलिया से आवागमन हो रहा है। पूर्व में वाहन चालक इन दोनों पुलिया का प्रयोग एक ओर आवागमन के लिए करते थे। लेकिन, क्षतिग्रस्त पुलिया के कारण उसकी समीप खड़ी दूसरी पुलिया पर वाहनों का दबाव बढ़ गया है। पुलिया की क्षमता इतनी नहीं है कि वह एक के बाद एक भारी वाहनों का भार उठा सके। ऐसे में इसकी स्थिति भी कब बिगड़ जाएं, कुछ कहा नहीं जा सकता। कुछ माह पूर्व गढ़वाल सांसद अनिल बलूनी ने हाईवे का निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को जल्द व्यवस्थाएं बेहतर बनाने के निर्देश दिए थे। लेकिन, सिस्टम अब भी लापरवाह बना हुआ है।

पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई पर पूर्व सैनिकों ने जताई खुशी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : भारतीय सेना की ओर से पाकिस्तान के खिलाफ की जा रही कार्रवाई पर पूर्व सैनिक सेवा परिषद व मोदी विचार मंच ने खुशी व्यक्त की है। कहा कि भारत ने पाकिस्तान को जड़ से खत्म करने का सोच लिया है।

संगठनों की ओर से बद्रीनाथ मार्ग स्थित एक रेस्टोरेंट में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें पूर्व सैनिक सेवा परिषद के अध्यक्ष गोपाल कृष्ण बड़थ्वाल ने कहा कि हमें अपनी सेना पर नाज है। भारतीय सेना ने आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान में चल रहे नौ आंतकी कैंपों को ध्वस्त कर अदम्य साहस व पराक्रम का परिचय दिया है। कहा कि अभी भी 12 आंतकी कैंप संचालित हो रहे है, सेना उन्हें भी जल्द ही ध्वस्त कर आतंक को जड़ से समाप्त करेगी। कहा कि सेना की इस कार्यवाही से आतंकवाद व उनके आकाओं को बहुत बड़ा संदेश दिया है। इस आपरेशन के बाद भी पाकिस्तान में पल रहे आतंकवादी अपनी हरकतों से बाज नहीं आए तो भारतीय सेना उन्हें मुंहतोड़ जबाब देगी।

अन्य वक्ताओं ने कहा कि इतिहास गवाह है कि 1948 से 1999 के बीच के सभी युद्धों, 2016 की सर्जिकल स्ट्राईक और 2019 के एअर स्ट्राइक के बाद भी पाकिस्तान कोई सबक नहीं ले रहा। इस मौके पर बलवान सिंह रावत, हरीश कुकशाल, मनोज बिष्ट, हरी चंद्र, सीपी डोबरियाल, अनूप बिष्ट, हसवंत सिंह बिष्ट, नरेंद्र सिंह मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास दिवस पर 80 लोगों ने किया रक्तदान

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास दिवस पर पौड़ी जिला अस्पताल में रेडक्रास सोसायटी राठ महाविद्यालय पैठाणी में रेडक्रास क्लब, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 65 लोगों ने रक्तदान किया। वहीं , जिला अस्पताल पौड़ी में पीएमएस व स्वयंसेवियों ने करीब 15 लोगों ने रक्तदान किया।गुरुवार को राठ महाविद्यायल में आयोजित शिविर का उद्घाटन करते हुए महाविद्यालय के संस्थापक एवं कांग्रेस नेता गणेश गोदियाल ने कहा कि युवाओं को इस तरह के रचनात्मक कार्यों में बराबर हिस्सेदारी करनी चाहिए कहा कि रक्तदान मानवता की महान सेवा है। महाविद्यालय के प्राचार्य डा. जीतेंद्र कुमार नेगी ने कहा कि रक्तदान करना बड़ी समाज सेवा के साथ साथ यह रक्तदाता के शरीर को भी स्वास्थ्य बनाने में सहायता प्रदान करता है, यह कैंसर और हार्ट अटैकिंग जैसी घातक बीमारियों से निजात दिलाने में सहयोग प्रदान करता है। बताया कि शिविर में 65 यूनिट रक्त जमा किया गया। वहीं, जिला अस्पताल पौड़ी में पीएमएस व स्वयंसेवियों ने करीब 15 यूनिट रक्तदान किया। जिला अस्पताल के ब्लडबैंक में आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन सीएमओ डॉ. पारूल गोयल व पीएमएस डॉ. एलडी समेवाल ने संयुक्त से किया। उन्होंने रक्तदान को मानवता के लिए सबसे बड़ा दान बताते हुए लोगों को समय समय पर रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही रक्तदान को लेकर लोगों की भ्रांतियों का भी समाधान किया। रेड क्रॉस सोसाइटी के जिला सचिव केसर सिंह असवाल ने बताया कि शिविर में स्वयंसेवियों ने 15 यूनिट रक्तदान व 30 स्वयंसेवियों ने पंजीकरण करवाया है। वहीं गढ़वाल इंस्टिट्यूट ऑफ पैरामेडिकल क्वार्क के शिक्षक डॉ. सुरेंद्र सिंह व छात्र छात्राओं ने सहयोग दिया। इस मौके एमडी पैथोलॉजिस्ट डा. विकास, डा. मदन मोहन नौडियाल, रघुवीर सिंह रावत, विपुल खंडूड़ी, सिद्वार्थ, अमित आदि शामिल रहे।

जारी रहेगा शिक्षकों का हाजिरी भेजने का विरोध

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : प्राथमिक शिक्षक संघ ने ऑनलाइन हाजिरी का बहिष्कार शुरू कर दिया है। संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि जब तक सेल्फ चेक इन हाजिरी के लिए आवश्यक संसाधन मुहैया नहीं करवाए जाते हैं तब तक वीएसके पोर्टल पर जिले के सभी शिक्षकों द्वारा हाजिरी भेजने का विरोध जारी रहेगा। गुरुवार को संघ के पदाधिकारियों ने जिलाशिक्षाधिकारी प्रारंभिक शिक्षा को ज्ञापन दिया। इस मौके पर संघ के जिलाध्यक्ष मनोज जुगरान, जिलामंत्री मनीष सिंह राणा, कोषाध्यक्ष विपुल भंडारी ने कहा कि पूर्व से ही शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन हाजिरी भेजी जा रही थी, लेकिन शासन के नए आदेश से शिक्षकों में आक्रोश व्याप्त है। कहा कि लोकेशन सहित हाजिरी भेजने का आदेश शिक्षकों की निजता का खुला उल्लंघन है। कहा कि यदि विभाग द्वारा ऑनलाइन हाजिरी भेजने को लेकर जिले में किसी भी शिक्षक पर दबाव या कार्रवाई की जाती है तो संघ उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होगा। कहा कि ऑनलाइन हाजिरी के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

प्रतियोगिताएं संपन्न, कला संकाय रहा चैंपियन

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में आयोजित दो दिवसीय अंतर संकाय सांस्कृतिक प्रतियोगिता में कला संकाय चैंपियन रहा। इस दौरान शिक्षकों ने विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कहा कि लक्ष्य तय कर आगे बढ़ने वाले विद्यार्थियों को सफलता अवश्य मिलती है।

महाविद्यालय में आयोजित दूसरे दिन की प्रतियोगिता का शुभारंभ महापौर शैलेंद्र सिंह रावत, भारत इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड की कोटद्वार इकाई के मुख्य प्रबंधक अंबरीश कुमार, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डीएस नेगी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। वक्ताओं ने विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कहा कि विद्यार्थियों को महाविद्यालय में होने वाली प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रतिभाग करना चाहिए। दो दिवसीय प्रतियोगिता के तहत लोकगीत में कला संकाय प्रथम, विज्ञान संकाय द्वितीय व शिक्षा संकाय तृतीय रहा। एकांकी नाटक में कला संकाय प्रथम, विज्ञान संकाय द्वितीय व शिक्षा संकाय तृतीय रहे। लोकनृत्य में कला संकाय प्रथम, शिक्षा संकाय द्वितीय व वाणिज्य संकाय तृतीय रहा। एकल गायन में चंद्रपाल राज, प्रथम, रोहन द्वितीय व आशीष कुमार तृतीय रहे। छात्र वर्ग के एकल नृत्य में प्रवेश प्रथम, ईशान निराला द्वितीय व नितिन कुमार तृतीय रहे। छात्रा वर्ग में शिवानी प्रथम, आयुषी द्वितीय व हिना नेगी तृतीय रही। कव्वाली प्रतियोगिता में विज्ञान संकाय प्रथम, कला संकाय द्वितीय व वाणिज्य संकाय तृतीय रहे। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाले सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि शैलेंद्र सिंह रावत ने प्रशस्ति पत्र व मेडल देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर प्रो. वसंतिका कश्यप, प्रो. आरएस चौहान, डा. अभिषेक गोयल, प्रो. आदेश कुमार, प्रो. आशा देवी, प्रो. राखी मौजूद रहे।

कोटद्वार के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में बच्चों को सम्मानित करते अतिथि

सरकारी भूमि पर कब्जा, प्रशासन व निगम ने हटाया

गाड़ीघाट में सरकारी भूमि से झोपड़ियों को हटाती प्रशासन की टीम

गिड़गिड़ाते रहे परिवार

शुक्रवार शाम जब सरकारी टीम अतिक्रमण हटाने पहुंची तो झोपड़ियों में रह रहे परिवारों में अफरा तफरी मच गई। झोपड़ियों को नहीं हटाने के लिए वह तहसीलदार व पुलिस के समक्ष गिड़गिड़ाते रहे। लोगों का कहना था कि वह पहले ही आपदा की मार झेल चुके हैं। ऐसे में उन्हें मात्र सिर ढकने के लिए ही झोपड़ी बनाई है। जबकि, उनके परिवार में छोटे-छोटे बच्चे भी है। ऐसे में वह अपने बच्चों को लेकर कहां भटकते रहेंगे।

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत गाड़ीघाट स्टेडियम के समीप खोह नदी के तट पर भूमि कब्जा कर बनाई जा रही दो झोपड़ियों को प्रशासन व नगर निगम ने हटा दिया है। इस दौरान लोगों ने प्रशासन की इस कार्रवाई का विरोध भी किया, लेकिन, सख्ती के आगे उनकी एक न चल सकी।

मालूम हो कि कुछ वर्ष पूर्व आपदा के दौरान खोह नदी के वेग से गाड़ीघाट क्षेत्र में कई भवन ढह गए थे। जिसके बाद इन भवनों में रहने वाले लोग किराए के भवनों में रह रहे थे। ऐसे में सुरक्षा दीवार निर्माण होने के बाद यह लोग दोबारा से भूमि पर झोपड़ी बनाने लगे हैं। जबकि, पूर्व में प्रशासन इन्हें उक्त भूमि पर दोबारा भवन निर्माण न करने की भी सख्त चेतावनी दे चुका है। प्रशासन का कहना था कि नदी किनारे सरकारी भूमि है। ऐसे में यहां अवैध कब्जा किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बावजूद कुछ लोग उक्त भूमि पर झोपड़ी का निर्माण करवा रहे थे। सूचना मिलते ही प्रशासन व निगम की टीम मौके पर पहुंची और झोपड़ियों को हटाने लगी। लेकिन, वहां मौजूद लोग इसका विरोध करने लगे। जिसके बाद प्रशासन को मौके पर पुलिस बुलानी पड़ी। उपजिलाधिकारी सोहन सिंह सैनी के निर्देश पर तहसीलदार साक्षी उपाध्याय के नेतृत्व में टीम ने झोपड़ियों को हटाया।

पुलिस ने आठ मकान मालिकों के काटे चालान

श्रीनगर गढ़वाल : श्रीनगर पुलिस टीम द्वारा पैरामिलिट्री फोर्स के साथ संयुक्त रूप से बाहरी व्यक्तियों, मजदूरों, किरायदारों के सत्यापन जांचने के लिये अभियान चलाया।

सत्यापन अभियान के तहत पुलिस टीम ने मकान मालिकों व भवन स्वामियों द्वारा अपने किरायेदार, नौकर आदि का सत्यापन नहीं करवाये जाने पर उत्तर-खण्ड पुलिस अधिनियम के तहत कानूनी कार्यवाही की। श्रीनगर कोतवाल जयपाल नेगी ने बताया अभियान के तहत कुल 215 किरायेदारों, मजदूरों, रेड़ी और ठेली वालों का भौतिक सत्यापन किया गया। वहीं आठ मकान मालिकों का अपने किरायेदार व नौकरों का सत्यापन न कराये जाने पर कुल अस्सी हजार रुपये का चालान काटा गया है। कहा कि अभियान आगे भी जारी रहेगा। कहा कि बिना सत्यापन रह रहे लोगों की जांच की जाएगी।

सीडीओ रेशियो में सुधार लाएं पीएनबी और एसबीआई

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : विकास भवन सभागार में गुरुवार को जिला स्तरीय बैंकर्स पुनरीक्षण समिति की त्रैमासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी गिरीश गुणवंत ने जिले में सीडी रेशियो में अपेक्षित प्रगति न होने पर पंजाब नेशनल बैंक और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया को सुधार लाने को कहा। सीडीओ ने विभागीय अफसरों व बैंक प्रतिनिधियों को ऋण वितरण की प्रक्रिया में तेजी लाने, कृषि विभाग को किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के तहत अधिक से अधिक लाभार्थियों को जोड़ने के लिए विशेष शिविर लगाने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना व एनआरएलएम में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए जिला सहकारी बैंक ने पहला, उत्तराखंड ग्रामीण बैंक ने दूसरा व स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही एनआरएलएम में बेहतर कार्य करने पर वित्त समन्वयक धनंजय भट्ट, पीएम स्वनिधि योजना में लक्ष्य प्राप्ति हेतु सिटी मिशन मैनेजर जगदीश रतूड़ी व बैंक समंवय में सहयोग के लिए सहायक लीड बैंक अधिकारी भूपेश नौटियाल को भी सम्मानित किया गया। बैठक में बताया गया कि प्रदेश स्तर पर पौड़ी जिले ने मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में शानदार प्रदर्शन करते हुए 900 के लक्ष्य के सापेक्ष 977 आवेदनों को स्वीकृत कर पहला स्थान प्राप्त किया। वहीं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में 3700 के लक्ष्य के सापेक्ष 3906 आवेदन स्वीकृत कर दूसरा स्थान हासिल किया। बैठक में पीडी डीआरडीए विवेक कुमार उपाध्याय, लीड बैंक अधिकारी प्रताप सिंह राणा आदि शामिल रहे।

सड़क निर्माण को लेकर लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने गुरुवार को पैठाणी क्षेत्र में चल रहे विभिन्न विकास योजनाओं का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान मंत्री ने राजकीय इंटर कॉलेज पैठाणी में 5 लाख रुपये की लागत से भवन मरम्मत कार्य का उद्घाटन, इंटर कॉलेज स्योली तल्ली में चाहरदीवारी निर्माण का शिलान्यास, गढ़वाल वन प्रभाग पौड़ी के तहत पैठाणी रेंज में नवनिर्मित भवन का भी उद्घाटन किया गया।

गुरुवार को निरीक्षण के दौरान मंत्री ने 11 किलोमीटर प्रस्तावित सड़क के लिए डीपीआर का कार्य शीघ्र पूरा करते हुए वन स्वीकृति की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए। कहा कि सड़क निर्माण को लेकर किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सड़क का कार्य पूरा होने पर इन छ गांवों के 100 से अधिक परिवारों को लाभ मिलेगा। इस दौरान उन्होंने पैठाणी क्षेत्र के दूरस्थ गांव कुवाखरक, कांडा, बरतोली, घंडियाली, इज्जर और भरीक को सड़क से जोड़ने को लेकर बैठक की। इस मौके पर पूर्व उपाध्यक्ष गढ़वाल मंडल विकास निगम राज रौथाण, उत्तराखंड राज्य सहकारी संघ के पूर्व अध्यक्ष मातवर सिंह रावत, मंडल अध्यक्ष विजय रौथाण, पूर्व मंडल अध्यक्ष आनंद रावत, वीरेंद्र रावत, नरेंद्र नेगी, नरेंद्र रावत, शिवचरण नौडियाल, डब्बल सिंह आदि मौजूद रहे।

6 वाहनों के काटे चालान, एक किया सीज

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : परिवन विभाग यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही कर रह है। परिवहन विभाग ने यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ अभियान चलाते हुए स्कूली वाहनों की जांच की गई।

पौड़ी बुआखाल पाबौ मार्ग व सत्याखाल मार्ग पर चेकिंग के दौरान 35 से 40 वाहनों की जांच की गई। इस दौरान नियमों का उल्लंघन करने पर 6 वाहनों का चालान किया गया, जबकि एक वाहन की फिटनेस नहीं होने पर वाहन को सीज किया गया। इस मौके पर आरटीओ (प्रवर्तन) अरविंद पांडेय, दीपक नौटियाल, मुख्तार, सूरज सिंह आदि शामिल रहे।

विद्यार्थियों को बांटी स्वच्छता से संबंधित सामग्री

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए विश्व रेडक्रास दिवस पर राजकीय इंटर कालेज कुंभीचौड़ में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों को स्वच्छता से संबंधित सामग्री वितरित की गई।

आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को साबुन, टूथपेस्ट, नारियल का तेल सहित अन्य सामग्री वितरित की। प्रधानाचार्य लखपत राज खुगशाल ने कहा कि स्वस्थ शरीर के लिए स्वच्छता पर ध्यान देना आवश्यक है।

हमें अपने जीवन में स्वच्छता को महत्व देना चाहिए। स्वच्छता का बल स्वच्छ शरीर के साथ ही स्वच्छ बुद्धि पर भी पड़ता है। भारतीय रेडक्रास समिति जनपद पौड़ी के जिला उपाध्यक्ष नीरज कुमार ने सभी विद्यार्थियों को विश्व रेडक्रास दिवस के महत्व के बारे में बताया। इस मौके पर अरविंद वर्मा, अनिल गौड़, पूनम पांथरी, दीप शिखा, अनीता रणा, राजेंद्र भंडारी, आनंद सिंह भंडारी, यशोदा नैथानी, मेहरबान सिंह रावत, महेश कुकरेती, विवेक चौहान, प्रकाश बिष्ट आदि मौजूद रहे।

कोटद्वार के राजकीय इंटर कालेज कुंभीचौड़ में आयोजित कार्यक्रम में छात्रा को स्वच्छता सामग्री देते अतिथि

इंटर कॉलेज पोखरी अजमीर के मेधावी छात्रों को किया सम्मानित

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की परिषदीय परीक्षा वर्ष 2024 -25 में विकासखंड दुगड्डा के इंटर कॉलेज पोखरी अजमीर के मेधावी छात्र-छात्राओं को शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर अनन्त कुकरेती स्मारक न्यास के संस्थापक मुख्य न्यासी जगदीश प्रसाद कुकरेती, अध्यक्ष श्रीमती मधु कुकरेती ने स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम में हाईस्कूल की छात्रा वैशाली 87 प्रतिशत, आयुष सिंह 84.68 प्रतिशत, प्रियांशी 84 प्रतिशत, सृष्टि 82 प्रतिशत, इंटर में प्रीति 79 प्रतिशत, ज्योति सिमरन 78 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय स्तर पर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर न्यास के प्रमुख न्यासी जगदीश कुकरेती ने विद्यालय के मेधावी छात्र-छात्राओं और गरीब छात्राओं को शिक्षण हेतु पूर्व की भांति आर्थिक सहयोग देने का आश्वासन दिया। विद्यालय प्रधानाचार्य मनवर लाल भारती ने कहा कि विद्यालय में अब शैक्षणिक संसाधनों की कमी नहीं है, परंतु वित्त विहीन मान्यता के अंतर्गत इंटर विज्ञान वर्ग को चलना अत्यंत कठिन हो रहा है। अब तक विद्यालय को विभिन्न सामाजिक संगठनों और दानी दाताओं द्वारा आर्थिक सहयोग किया गया है। आगे भी इस प्रकार की सहायता प्राप्त हो इसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। इस सम्मान समारोह कार्यक्रम में चण्डी प्रसाद कुकरेती पूर्व सांसद प्रतिनिधि, विद्यालय प्रबंध समिति के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद गौड़, पूर्व कोषाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद केष्टवाल, पूर्व उप प्रबंधक रामपाल सिंह रावत, पूर्व सदस्य राजेंद्र प्रसाद केष्टवाल सहित चेतराम केष्टवाल, मंगतराम केष्टवाल, वीर सिंह नेगी, दिनेश सिंह राणा, श्रीमती राजकुमारी देवी, हिमानी जुयाल द्विवेदी, विक्रम लाल, दीपक गुसाई, पंकज कुमार, प्रभाकर रावत, नितेश सिंह, विपिन सिंह, शुभम गौड़, अंकित कुमार, उदय सिंह भंडारी, पूरन सिंह आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम का संचालन दिनेश सिंह राणा ने किया।

मेधावी छात्रों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि।

गढ़वाल विवि ने जारी किया अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का ब्रौसर

श्रीनगर गढ़वाल : गढ़वाल विवि के भूगोल विभाग ने 46वीं आईआईजी वार्षिक बैठक और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का ब्रौसर जारी किया है। कार्यक्रम के संयोजक एवं भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. मोहन सिंह पंवार ने बताया कि गढ़वाल विवि के भूगोल विभाग में 25 अक्टूबर से 27 अक्टूबर तक प्रथम बार आईआईजी वार्षिक बैठक और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला प्रस्तावित है। बताया कि सम्मेलन में गतिशील पृथ्वी, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन जैसे ज्वलंत मुद्दों पर मंथन होगा और शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे। पंवार ने जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय भूगोल संस्थान (आईआईजी) की 46वीं वार्षिक बैठक एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन की जिम्मेदारी इस बार गढ़वाल विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग को दी गई है। आगामी 25 से 27 अक्टूबर तक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन स्वामी मनमंथन प्रेक्षागृह में किया जाएगा, जिसमें देश-विदेश के प्रतिष्ठित भूगोलविद व पर्यावरण वैज्ञानिक भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि आज के दौर में बदलती तकनीक और सामाजिक परिस्थितियां पर्यावरण पर गहरा असर डाल रही हैं। जहां एक ओर अत्याधुनिक तकनीकों ने जीवन को सरल बनाया है, वहीं दूसरी ओर इनसे उत्पन्न पर्यावरणीय संकट ने पृथ्वी प्रणाली व वैश्विक सामाजिक-आर्थिक ढांचे को प्रभावित किया है।

संक्षिप्त समाचार

304 हज यात्रियों को लगाए टीके

देहरादून। माजरा स्थित मदरसा जामिउल उलूम में हज कमेटी ऑफ उत्तराखंड एवं स्वास्थ्य विभाग की ओर से टीकाकरण एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें दून जिले के 304 हज यात्रियों को डीआईओ डॉ. दिनेश चौहान एवं एडीआईओ वाईडी थपलियाल की अगुवाई में टीम ने टीके लगाए एवं हेल्थ कार्ड बनाए। स्वास्थ्य विभाग के डॉक्टरों ने उन्हें अपनी सेहत के प्रति जागरूक और सतर्क रहने को अपील की। उलमा ने यात्रियों को हज के अरकान बताए और इनके पालन की अपील की। मुख्य अतिथि हज कमेटी के अध्यक्ष हाजी खतीब अहमद, वक्फ बोर्ड अध्यक्ष हाजी शादाब शम्स ने लोगों को हज यात्रा की बधाई दी, वहां जाकर मुल्क की सलामती, अमन चैन की दुआ की अपील की।इस दौरान मुफ्ती वासिल, मौलाना शाकिर, डॉ. एस फारूक, मौलाना एजाज, पूर्व पार्षद आफताब आलम, मुफ्ती शहजाद, कमेटी अधिकारी मोहम्मद आरिफ और मोहम्मद अहसान, अब्दुल कादिर, प्रशासक मुस्तकीम हसन, गुलफाम शेख, इमरान मलिक, हारून, नौशाद आदि मौजूद रहे।

नए दोपहिया वाहन के साथ हेलमेट नहीं दिया तो होगी कार्रवाई

देहरादून। यदि आप नया दोपहिया वाहन खरीदते हैं तो वाहन डीलर आपको निशुल्क हेलमेट भी देगा, लेकिन दून के ज्यादातर डीलर इस नियम का पालन नहीं कर रहे हैं। शिकायत मिलने पर आरटीओ प्रशासन ने शहर के सभी वाहन डीलरों को पत्र लिखा है। आरटीओ हेलमेट नहीं देने पर ट्रेड सार्टीफिकेट के खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी दी है। दोपहिया वाहन खरीदने पर वाहन स्वामी को निशुल्क हेलमेट देने का नियम है। दून में हर रोज बड़ी संख्या में दोपहिया वाहनों की खरीद हो रही है, लेकिन चंद वाहन डीलरों को छोड़ दें तो बाकी सभी निशुल्क हेलमेट नहीं दे रहा है। इसकी शिकायत लोगों ने परिवहन विभाग से की है। इसके बाद आरटीओ (प्रशासन) संदीप सैनी ने शहर के सभी दोपहिया वाहन डीलरों को पत्र लिखा है, उन्होंने दोपहिया वाहन के साथ निशुल्क हेलमेट देने को कहा है। चेताया कि यदि हेलमेट नहीं दिया जाता है तो डीलर के ट्रेड सार्टीफिकेट के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। पहले नोटिस दिया जाएगा, यदि जबाव संतोषजनक नहीं मिलता है तो सार्टीफिकेट रद भी किया जा सकता है।

संभाषण में आदित्य सिंह और ऋषभ ने बाजी मारी

देहरादून। निःशक्तजन प्रशिक्षण एवं पुनर्वास केंद्र (विकल्प) के 17वें स्थापना दिवस पर आयोजित संभाषण प्रतियोगिता में जसवंत मार्डन स्कूल के अदिति सिंह और ऋषभ कुमार प्रथम, जीजीआईसी की शाफिया और तमन्ना बिन्नी द्वितीय, एसजीआरआर बसंत विहार की सौम्या चौधरी और अवनि तृतीय रहीं। दून लाइब्रेरी में गुरुवार को प्रतियोगिता आयोजित की गई। मुख्य अतिथि मीनाक्षी गंडोत्रा, सविता मोहन, संस्था की संरक्षक डॉ. कमला पंत, विशिष्ट अतिथि गिरीश चंद्र पांडेय, भारती पांडे ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अध्यक्ष भारती पांडे ने बताया कि संभाषण प्रतियोगिता मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण विशेष बच्चें के विकास के लिए किया गया। मुख्य अतिथि मीनाक्षी गंडोत्रा ने कहा कि चुनौती पूर्ण बच्चों के लिये शाब्दिक शिक्षा के साथ सद्भावना भी आवश्यक है।कार्यक्रम का संचालन अनिल वर्मा ने किया, आभार संयोजक सुभाषिणी डिमरी ने दिया। मौके पर सचिव मीनाक्षी लोहानी, महेश पांडे, आरके बहुगुणा, विजय लक्ष्मी अग्रवाल, सरिता बोरा, सुंदर बिष्ट, जगदीश, राजश्री कपूर, प्रेमलता वर्मा, प्रकाश बिष्ट, जामवंती पुष्पवान, शोभा पांडेय आदि मौजूद थे।

वारंटी में मोबाइल ठीक नहीं करना पड़ा महंगा

देहरादून। वारंटी अवधि में मोबाइल ठीक नहीं करना कंपनी, डीलर और सर्विस सेंटर को महंगा पड़ गया। उपभोक्ता आयोग ने तीनों को सेवा में कमी का दोषी पाते हुए मोबाइल रिपेयरिंग के 10 हजार रुपये, 03 हजार रुपये वाद व्यय के साथ लौटाने के आदेश दिए हैं। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष पुष्पेंद्र खरे, सदस्य अल्का नेगी की कोर्ट ने गुरुवार को 07 साल पुराने मामले में सुनवाई की। जानकारी के अनुसार, प्रदीप सिंघल निवासी साकेत कॉलोनी राजपुर रोड ने 2018 में गेलोर्ड एम्पोरियम प्रोपराईटर पलटन बाजार से अपने बेटे के लिए 12 हजार रुपये का सैमसंग का मोबाइल खरीदा था।

इस मोबाइल पर सैमसंग इंडिया इलेक्ट्रानिक प्राइवेट लिमिटेड की ओर से 1 साल की वारंटी दी गई थी।

अधिकारियों ने एसईओसी से की रेस्क्यू ऑपरेशन की निगरानी

घायल यात्री को एयरलिफ्ट कर एम्स ऋषिकेश पहुंचाया

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : उत्तरकाशी के गंगनानी के समीप हेलीकॉप्टर दुर्घटना की सूचना मिलते ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर सचिव आपदा प्रबंधन विनोद कुमार सुमन आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारियों के साथ कंट्रोल रूम पहुंचे और रेस्क्यू अभियान की मॉनीटरिंग की। उन्होंने जिलाधिकारी उत्तरकाशी मेहरबान सिंह बिष्ट से फोन पर वार्ता कर रेस्क्यू अभियान की जानकारी ली। एसईओसी से ग्राउण्ड जीरो में मौजूद राहत और बचाव दलों से भी लगातार अपडेट लिया।

गुरुवार को सुबह 8.30 बजे यूएसडीएमए स्थित राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र को एरोट्रांस कंपनी के हेलीकॉप्टर के उत्तरकाशी जनपद स्थित गंगनानी के पास क्रैश होने की सूचना प्राप्त हुई। सूचना मिलते ही सचिव

आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रशासन आनंद स्वरूप, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी मो. ओबैदुल्लाह अंसारी, स्वास्थ्य विभाग के आपदा प्रबंधन नोडल अधिकारी डॉ. बिमलेश जोशी, एसईओसी प्रभारी रोहित कुमार तथा यूएसडीएमए के अन्य विशेषज्ञ कंट्रोल रूम पहुंचे। एसईओसी से तत्काल घटनास्थल के जियो कोआर्डिनेट्स प्राप्त किए गए, ताकि राहत और बचाव कार्यों के दौरान एयर सपोर्ट की आवश्यकता महसूस होने पर कोई दिक्कत न आए। सचिव आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास विनोद कुमार सुमन ने बताया कि इस दुःखद हादसे में छः लोगों की मृत्यु हुई है तथा एक व्यक्ति घायल हुआ है। घायल व्यक्ति को हेली एम्बुलेंस के जरिये एम्स ऋषिकेश में भर्ती कराया गया। मृतकों का पोस्टमार्टम उत्तरकाशी जिला मुख्यालय में किया जा रहा है। इस दौरान डॉ. वेदिका पन्त, डॉ. पूजा राणा, मनीष भगत, हेमंत बिष्ट, सुश्री तंद्रिला सरकार मौजूद रहे।

प्लास्टिक निर्मित बोतलों पर लगाया क्यूआर कोड

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : बद्रीनाथ धाम व यात्रा मार्ग को स्वच्छ व प्लास्टिक मुक्त बनाने को जिला प्रशासन द्वारा प्लास्टिक निर्मित बोतलों पर क्यूआर कोड लगाया गया है।

उप जिलाधिकारी चन्द्रशेखर वशिष्ठ ने बताया कि बद्रीनाथ धाम व यात्रा मार्ग को प्लास्टिक मुक्त किए जाने को लेकर जिला प्रशासन और रिसाइकल कंपनी के मध्य अनुबंध किया गया है। रिसाइकल कंपनी द्वारा गोविंदघाट, बद्रीनाथ धाम व माणा में प्लास्टिक बोतल पेय पदार्थों के थोक विक्रेता, दुकान, होटल, रेस्तरां के संचालकों को प्लास्टिक निर्मित बोतल/पेय पदार्थ पर न्यूनतम 10 रूपये के क्यूआर कोड उपलब्ध कराए गये हैं। वहीं रिसाइकिल कंपनी द्वारा गोविंदघाट, बद्रीनाथ धाम व माणा डिपॉजिट रिफंड काउंटर लगाए गए हैं। यात्री इन काउंटरों पर क्यूआर कोड वाली खाली बोतल जमा कर डिपॉजिट रिफंड ले सकेंगे।

11 मई को छः केंद्रों पर होगी राज्य सिविल सेवा परीक्षा

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : लोक सेवा आयोग द्वारा सम्मिलित राज्य सिविल/अवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा-2024 की प्रारंभिक परीक्षा (वस्तुनिष्ठ प्रकार) 11 मई (रविवार) को आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर परिधि में धारा-163 प्रभावी रहेगी। उप जिला मजिस्ट्रेट रूद्रप्रयाग आशीष चंद्र घिल्डियाल ने जानकारी देते हुए बताया कि उक्त परीक्षा पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 1 बजे तक एकल सत्र में आयोजित की जाएगी। जनपद के अंतर्गत परीक्षा में 1284 परीक्षार्थी शामिल होंगे। जिसके लिए कुल 06 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। बताया कि परीक्षा केंद्रों में शांति व्यवस्था, गोपनीयता व शुचिता बनाए रखने हेतु परीक्षा केंद्रों में एक-एक पुरूष व महिला कांस्टेबल सहित कोषागार से सेक्टर मजिस्ट्रेट व दो-दो सशस्त्र पुलिस कांस्टेबल की तैनाती की जाएगी। उन्होंने बताया कि परीक्षा की अवधि में परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर परिधि में धारा-163 प्रभावी रहेगी। इस दौरान परीक्षा केंद्र के निर्धारित परिधि में पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के साथ एकत्रित होने पर निषिद्ध किया जाता है। साथ ही किसी भी तरह के आग्नेयास्त्र, लाठी, डंडा, चाकू, हॉकी, स्टिक, खुखरी, तलवार अथवा कोई तेज धार वाला शस्त्र सहित पटाखे, बम व अन्य ज्वलनशील पदार्थ पूर्णतः प्रतिबंधित रहेंगे। परीक्षा केंद्रों के आस-पास मार्गों, पैदल मार्गों पर न तो कोई व्यक्ति अवरोध उत्पन्न करेगा और न ही ऐसा करने का प्रयास करेगा। परीक्षा केंद्रों के बारे में जानकारी देते हुए उप जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि कुल 06 परीक्षा केंद्रों में अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज व शहीद गोविंद सिंह राजकीय बालिका इंटर कॉलेज रूद्रप्रयाग सहित अनूप नेगी मेमोरियल पब्लिक स्कूल गुलाबराय, राजकीय इंटर कॉलेज रतूड़ा, स्व. हरिदत्त बेंजवाल अटल उत्कृष्ट इंटर कॉलेज व राजकीय बालिका इंटर कॉलेज अगस्त्यमुनि शामिल हैं।

अपर स्वास्थ्य सचिव ने अस्पतालों में परखी स्वास्थ्य व्यवस्थाएं

विकासनगर। चारधाम यात्रा मार्ग पर यात्रियों को मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधा और डेंगू को लेकर की जा रही तैयारियों को परखने के लिए अपर स्वास्थ्य सचिव रीना जोशी ने पछुवादून के अस्पतालों का निरीक्षण किया। उन्होंने डेंगू के लिए प्रत्येक अस्पताल में वार्ड आरक्षित रखने के साथ ही जिन क्षेत्रों में डेंगू के मरीज मिल रहे हैं, उन क्षेत्रों में सर्वे कर लार्वा को नष्ट करने के निर्देश दिए। अपर स्वास्थ्य सचिव रीना जोशी ने गुरुवार को सबसे पहले पीएचसी सेलाकुई, सीएचसी सहसपुर का निरीक्षण किया। सीएचसी में डेंगू के लिए वार्ड आरक्षित रखने के निर्देश दिए। इसके साथ ही डेंगू की जांच बढ़ाने को कहा। यात्रा संचालन केंद्र हरबर्टपुर में स्वास्थ्य विभाग की ओर से संचालित की जा रही ओपीडी में पर्याप्त चिकित्सकों समेत अन्य पैरामेडिकल कर्मी तैनात रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यात्रियों की स्वास्थ्य जांच के बाद आगे की यात्रा जारी रखने से पहले उन्हें स्वास्थ्य संबंधी जोखिम की जानकारी दी जानी जरूरी है। ताकि यात्री उच्च हिमालयी क्षेत्रों में आने वाली स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों की पूरी जानकारी ले सकें। उप जिला चिकित्सालय विकासनगर के निरीक्षण के दौरान अपर स्वास्थ्य सचिव ने डेंगू को लेकर सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि क्षेत्र का सबसे बड़ा स्वास्थ्य केंद्र होने के कारण डेंगू पीड़ित अधिकांश मरीज यहीं उपचार के लिए आएंगे। ऐसे में डेंगू के लिए एक वार्ड आरक्षित रखने के साथ ही जांच की संख्या बढ़ाई जानी जरूरी है। उन्होंने तहसील प्रशासन को भी डेंगू को लेकर लोगों को जागरूक करने के निर्देश दिए। अपर सचिव ने पीएचसी कालसी का भी निरीक्षण किया।

पहलगाम आंतकी हमले में मारे गए लोगों की आत्मा शांति के लिए किया पाठ

देहरादून। आर्य समाज मंदिर धामावाला के संयोजन में गुरुवार को पंडित दीन दयाल उपाध्याय पार्क तहसील चौक में पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए निहत्थे पर्यटकों की आत्मा शांति के लिए शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य समाज मंदिर धामावाला के पुरोहित आचार्य विद्यापति शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुए शांति यज्ञ के बाद तहसील चौक से मिशन स्कूल, पलटन बाजार होते हुए अम्बेडकर पार्क (घंटाघर) तक लघु पद यात्रा भी निकाली गई। शांति यज्ञ तथा पदयात्रा में दून नगरवासियों के अतिरिक्त गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की बालिकाएं, श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम की बालिकाएं, बालक, डीएवी कालेज के छात्र–छात्राएं, दून उद्योग व्यापर मंडल, युवा व्यापर मंडल, सर्राफा मंडल, पलटन बाजार व्यापार संगठन, दून उद्योग युवा व्यापार मंडल, आर्य उप प्रतिनिधि सभा के सभी प्रतिनिधि शामिल हुए। घंटाघर स्थित अम्बेडकर पार्क में पद यात्रा समापन हुआ। राष्ट्रीय एकता, अखंडता, अहिंसा और सहनशीलता के संकल्प को सुदृढ़ करने और आतंकवाद के विरोध में सभी ने शपथ ली।

दूध पीकर गौमाता को सड़कों पर न छोड़े

श्रीमद् भागवत कथा में उमड़ रहे श्रोता

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : विकासखंड कल्जीखाल पट्टी मनियारस्यूं के ग्राम हंसुड़ी में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा सुनने के लिए लोग भारी संख्या में पहुंच रहे है। कथा के पांचवे दिन राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित शिव स्वरूप जी महाराज ने कहा कि कलियुग में अगर सुखी होना है तो भगवान का नाम जपना ही होगा। कहा कि गौसेवा जरूर करे और दूध पीकर गौमाता को सड़को पर जो लोग छोड़ देते है। वो लोग पाप के भागी होते है।

कथा कथा श्रवण करने पहुंचे क्षेत्रीय विधायक राजकुमार पोरी ने कहा कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजन होने चाहिए, ताकि हमारी सनातन संस्कृति और सनातन धर्म सुरक्षित रहे और नई पीढ़ी को

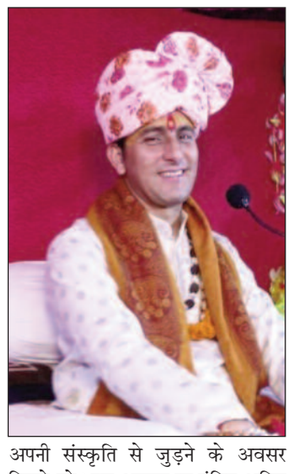

अपनी संस्कृति से जुड़ने के अवसर मिलते रहे। इस अवसर पर पंडित अमित कोठारी, नरेश मदवाल, महेश पंत, जितेंद्र पैन्यूली, चंडी प्रसाद काला, अंकित नैथानी, मनोज जुगरान सहित श्रीमद् भागवत कथा मुख्य यजमान उपेंद्र बिष्ट, शौर्य बिष्ट, प्रेम प्रकाश कुकरेती, पूर्व प्रधानाचार्य मनोहर सिंह रावत, हरेंद्र सिंह रावत, सुरेन्द्र सिंह रावत, जय सिंह नेगी, धर्मेंद्र सिंह नेगी, समाजिक कार्यकर्ता जगमोहन डांगी, विजय नैथानी, चित्र सिंह रावत आदि मौजूद थे।

युवतियों ने युवक की बीच सड़क पर की पिटाई

विकासनगर। दो युवतियों ने एक युवक पर कुछ दिन पहले कार चढ़ाने के प्रयास का आरोप लगाया। इस संबंध में उन्होंने चौकी में तहरीर भी दी थी। गुरुवार को युवक अचानक युवतियों को विकासनगर में कार सहित दिखाई दिया तो उन्होंने उसे कार उतारा और कुछ युवाओं को साथ लेकर उसे जमकर पीट दिया। करीब एक घंटे तक जमकर हंगामा हुआ। बाद में पुलिस ने मामला शांत करवाया। बताया जा रहा है कि कुछ दिन पूर्व डाकपत्थर क्षेत्र में एक युवक और युवती कार से जा रहे थे। युवक समुदाय विशेष का था। दोनों युवतियों ने उसकी कार का पीछा किया। उनका कहना था कि जो युवती कार में बैठी थी, वह उसे जानते थे। कार का पीछा करते हुए आरोप है कि युवक ने उन दो युवतियों पर कार चढ़ाने का प्रयास किया। जिसके बाद युवतियों ने चौकी डाकपत्थर में तहरीर देकर युवक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। हालांकि, युवतियों का कहना है कि वह युवक को जानते नहीं थे। गुरुवार को अचानक युवतियों को वह युवक विकासनगर में कार से जाता हुआ दिखाई दिया। जिसके बाद युवतियों ने उसे कार से नीचे उतारा और उसकी जमकर पिटाई कर दी। इसी दौरान वहां कुछ हिंदूवादी संगठनों के सदस्य भी आ गए और उन्होंने भी उसकी पिटाई कर दी।

बिजली कनेक्शन के लिए ईई का घेराव

हल्द्वानी। छह माह बाद भी बिजली का कनेक्शन नहीं मिलने पर गुरुवार को भीम आर्मी ने ऊर्जा निगम के ईई का घेराव कर आक्रोश जताया। साथ ही विभागीय कार्मिक पर मीटर के बदले रुपये मांगने का आरोप लगाया। बिजली कटौती से परेशान लोगों को अब नया कनेक्शन मिलना भी मुश्किल हो गया है। भीम आर्मी ने गुरुवार को ऊर्जा निगम के तिकोनिया स्थित कार्यालय में कनेक्शन न मिलने के विरोध में प्रदर्शन किया। इस दौरान ईई को सौंपे ज्ञापन में कहा कि पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष ने छह माह पहले बिजली के कनेक्शन के लिए आवेदन किया।

इसके बाद विभाग की ओर से भेजे मैसेज के अनुसार निर्धारित धनराशि विभाग में जमा कर दी गई।

सके बाद उनके पास आए अनजाने नंबर से मीटर लगाने के लिए रुपये की मांग की गई। इसके लिए मना करने पर

पोल से मीटर तक की केबल लाने को कहा गया। जबकि विभाग को इसे लगाना होता है। इसकी जानकारी विभाग के अभियंताओं को भी दी गई, लेकिन अभी तक मीटर नहीं लगाया गया है। कहा कि विभाग के कार्मिक लगातार नया कनेक्शन देने के लिए लोगों को परेशान कर रहे हैं। इसकी जांच कर कनेक्शन देने की मांग की गई। ईई प्रदीप कुमार ने मामले की जांच कर कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस मौके पर नफीस अहमद खान, विकास चौहान, हरीश लोधी, जीवन आर्य, फिरोज अहमद, रजनी जोशी, कैलाश पांडेय, महेश, केके बोरा, लक्ष्मी नारायण मौजूद रहे।

बस्तियों को बचाने के लिए नगर निगम में प्रदर्शन

देहरादून। बस्ती बचाओ आंदोलन के बैनर तले विभिन्न संगठनों से जुड़े लोगों ने नगर निगम में प्रदर्शन कर नारेबाजी की। आक्रोशित लोगों ने आरोप लगाया कि एलिवेटेड रोड के नाम पर बस्ती के लोगों को बेदखल करने की तैयारी चल रही है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। चेताया कि जब तक बस्ती के लोगों को पुनर्वास और बाजार रेट पर मुआवजा नहीं मिलता है, तब तक विरोध जारी रहेगा। गुरुवार को बस्ती बचाओ आंदोलन के जुड़े लोग नगर निगम परिसर पहुंचे। यहां वक्ताओं ने कहा कि सरकार बस्ती वालों के साथ छल कर रही है। चुनाव के समय बस्तियों को नियमित करने का आश्वसन दिया गया, अब बस्तियों को नियमित करने के बजाय उनको उजाड़ने की तैयारी चल रही है। बस्तियों के मकानों पर लाल निशान लगाकर चिह्नित किया जा रहा है।

रिस्पना–बिंदाल पर एलिवेटेड रोड के नाम पर उनको उजाड़ने की तैयारी चल रही है।

सहकारिता चुनाव पर कांग्रेस चुप, भाजपा में घमासान

देहरादून। सहकारिता चुनाव को लेकर कांग्रेस में खामोशी है। दूसरी ओर भाजपा के भीतर घमासान की स्थिति है। भाजपा का एक गुट लगातार चुनाव को दबाव बनाए हुए हैं। दूसरे गुट को मौजूदा नियमों, व्यवस्था में चुनाव से परहेज है। दोनों गुट अलग अलग दिशाओं में दबाव बनाए हुए हैं। सहकारिता चुनाव के पहले चरण में प्राथमिक स्तर की बहुउद्देशीय सहकारी समितियों में चुनाव शुरू किए गए थे। इसके बाद जिला स्तरीय समितियों के चुनाव होने थे। पहले ही दिन से भाजपा का एक गुट चुनाव में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने के साथ नियम 12 बी के प्रावधानों का विरोध कर रहा था। जिसमें तीन साल में सहकारी समितियों में लेनदेन न करने वालों को भी वोटिंग का अधिकार देने का निर्णय कैबिनेट ने किया था। इस नए नियम से सहकारिता के कई बड़े नेताओं की सियासत पर संकट गहरा गया था। इस गुट ने चुनाव रोकने को कोर्ट में अपनी ही सरकार को घेरा। इन उठापटक में हाईकोर्ट से चुनाव पर रोक का निर्णय हुआ। हाईकोर्ट के इस निर्णय के खिलाफ कांग्रेस की बजाय भाजपा के भीतर से ही सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। इस पूरे मामले में कांग्रेस पूरी तरह किनारे खड़े होकर तमाशा देखने की स्थिति में है। कांग्रेस की ओर से इस मसले पर न जल्द चुनाव कराने को दबाव बनाया जा रहा है और न ही चुनाव स्थगित करने को दबाव बनाया जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट के निर्णय की जानकारी शासन के न्याय विभाग को दे दी गई है। न्याय विभाग के साथ ही शासन स्तर से स्पष्ट दिशा निर्देश प्राप्त होते ही उसी अनुरूप कदम उठाया जाएगा।

— हंसादत्त पांडेय, अध्यक्ष
सहकारी निर्वाचन प्राधिकरण

ट्रेन के एसी कोच में पेंट्री वालों ने यूट्यूबर से की मारपीट

ऋषिकेश। आप,हम जैसे न जाने कितने लोग ट्रेन में यात्रा करते हैं,समस्या होने पर या शिकायत करने पर उसे ठीक भी किया जाता है। अगर हम आपसे कहें कि ट्रेन में शिकायत करने पर आपकी मार भी हो सकती है,तो आपको हैरानी होगी। एक यूट्यूबर को ट्रेन के पेंट्री टीम से ज्यादा पैसे लेने पर आपत्ति जताना भारी पड़ गया। खाने–पीने की चीजों की ज्यादा कीमत चार्ज करने की शिकायत रेलवे से करने पर गुस्साए पेंट्री वालों ने शख्स की कुटाई कर दी। हेमकुंट एक्सप्रेस के एसी कोच के अंदर हुई इस पूरी घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो सामने आते ही रेल सेवा ने भी कड़ी कार्रवाई करते हुए 5 लाख का भारी जुर्माना लगाया है। घटना 6 मई की है। यूट्यूबर विशाल शर्मा हेमकुंट एक्सप्रेस में सवार हुए,जो ऋषिकेश और श्री माता वैष्णो देवी कटरा के बीच चलती है। उन्होंने अपने थर्ड एसी कोच के अंदर पानी की एक बोतल खरीदते हुए खुद का वीडियो बनाया। कफळळउ के पेंट्री कर्मचारियों को केवल □15 की अनुमोदित कीमत पर रेल नीर पानी की बोतलें बेचने की अनुमति है। हालांकि,विशाल शर्मा को वंडर एक्वा की एक बोतल दी गई और कहा कि इसकी कीमत 20 रुपये है। जब उन्होंने आपत्ति जताई,तो पानी की बोतल बेचने वाले विक्रेता ने उनसे कहा:"यही मिला है सर।" बाद में,ट्रैवल व्लॉगर ने 20 में कॉफी खरीदते हुए भी खुद का वीडियो बनाया। कॉफी का ओरिजनल दाम 10 प्रति कप है।रेलवे की ओर से फिक्स 40 के बजाय □50 में नूडल्स खरीदे। विशाल ने रेल मदद ऐप पर शिकायत दर्ज कराई जिसमें कहा गया था कि यात्रा के दौरान उनसे ज्यादा पैसे लिए गए थे।

मशक गांव की सड़क लोनिवि को ट्रांसफर करने की मांग

विकासनगर। विकासखंड चकराता अन्तर्गत मशक गांव के लिए बनाई गई वैकल्पिक सड़क को ग्रामीणों ने लोनिवि को हस्तानांतरित करने की मांग की है। इस संबंध में ग्रामीणों ने क्षेत्रीय विधायक प्रीतम सिंह को ज्ञापन प्रेषित किया। ग्रामीणों ने कहा कि कोटी–रजाणू मोटर मार्ग के बिनसोन गांव से मशक के लिए ढाई किलोमीटर संपर्क मार्ग जिला पंचायत निधि, विधायक निधि के माध्यम से बनाई गई है, लेकिन बारिश के दौरान सड़क पर कीचड़ होने व मलबा आने से वाहन चढ़ाई में नहीं चढ़ पाते हैं। जिससे ग्रामीणों को आवागमन में दिक्कत उठानी पड़ती है। विशेषकर बुजुर्ग, महिला, बच्चों और बीमारी के दौरान ग्रामीणों को पैदल रास्ता नापना पड़ता है।

एमडीडीए द्वारा किए जारे निर्माण कार्यों की खराब गुणवत्ता पर भड़के कांग्रेसी

ऋषिकेश। ऋषिकेश में हरिद्वार मार्ग पर एमडीडीए की ओर से किए जा रहे डिवाइडर रेलिंग निर्माण की गुणवत्ता पर कांग्रेस ने सवाल खड़े किये हैं। गुरुवार को कांग्रेसी हरिद्वार मार्ग पर पहुंचे और निर्माण में कमी का आरोप लगाकर नाराजगी जताई। अवर अभियंता के मौके पर पहुंच गुणवत्ता में सुधार का भरोसा मिलने पर कांग्रेसी माने। इन दिनों हरिद्वार मार्ग पर एमडीडीए डिवाइडर रैलिंग निर्माण कर रहा ठेकेदार द्वारा बिना सीसी के रेलिंग को हथौड़े से ठोकर लगाया जा रहा है। रेलिंग में बिना प्राइमर के पेंट किया गया है। कांग्रेस नेता जयेन्द्र रमोला ने बताया कि मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण के द्वारा किये जा रहे विकास कार्यों में गुणवत्ता और निविदा प्रक्रिया से हटकर कार्य करने की शिकायतें मिल रही हैं।

बीमार घोड़े-खच्चरों को 50 प्रतिशत सब्सिडी पर मिलेगा चारा

जयन्त प्रतिनिधि। रूद्रप्रयाग : श्रीकेदारनाथ यात्रा के दौरान घोड़ा-खच्चर अहम भूमिका निभाते हैं, लेकिन पिछले कुछ दिनों से इनमें इक्वाइन इंफ्लुएंजा के लक्षण दिखाई देने एवं कुछ पशुओं की मृत्यु होने के पश्चात जिला प्रशासन ने तत्काल कार्यवाही करते हुए अनेक कदम उठाए। प्रशासन ने पिछले 48 घंटे से श्रीकेदारनाथ यात्रा मार्ग पर घोड़े-खच्चरों के परिचालन पर पूरी तरह से रोक लगाई है, जो फिलहाल जारी है। 18 चिकित्सकों की टीम के साथ-साथ पंतनगर विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान संस्थान हिसार के विशेषज्ञ चिकित्सक लगातार सैंपलिंग एवं परीक्षण कर रहे हैं। इसी क्रम में घोड़े-खच्चर मालिकों को तात्कालिक राहत देने के लिए जिला प्रशासन ने एक और कदम उठाया है। जिला प्रशासन ने दो क्वारंटीन सेंटर, चेतक-1 एवं चेतक-2 बनाए हैं एवं घोड़े खच्चरों के मालिकों से अपील की है कि वे अपने बीमार घोड़े-खच्चरों को इन सेंटरों में रखें। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ. आशीष रावत ने बताया कि क्वारंटीन सेंटरों में बीमार घोड़े-खच्चरों ठीक होने तक खाने के चोर से लेकर सभी तरह की देखभाल पशुपालन विभाग द्वारा की जाएगी। उन्होंने बताया कि जिन पशुपालकों के घोड़े-खच्चर बीमार हैं, वे इक्वाइन इंफ्लुएंजा बीमारी का प्रमाण पत्र पशुपालन विभाग को दिखाकर पचास प्रतिशत सब्सिडी पर पर चारा क्रय कर सकते हैं। डॉ. आशीष रावत ने बताया कि प्रशासन घोड़े-खच्चरों में फैली बीमारी पर नियंत्रण के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है और इस दौरान पशुपालकों के लिए दवाइयां एवं रियायती दर पर चारा भी उपलब्ध कराया गया है।

स्थानीय पशुपालकों ने की घोड़े-खच्चरों की जांच की मांग

घोड़े-खच्चरों में फैले संक्रमण के बीच स्थानीय निवासियों एवं पशुपालकों ने भी घोड़े-खच्चरों की व्यापक स्तर पर जांच एवं ईलाज की मांग की है। प्रधान संगठन ऊखीमठ के अध्यक्ष सुभाष रावत ने जिला प्रशासन को पत्र भेजकर कहा कि यात्रा मार्ग पर घोड़े-खच्चरों के आवागमन पर रोक 3-4 दिन और जारी रहनी चाहिए, जिससे सभी घोड़े-खच्चरों की जांच कर बीमारी पर नियंत्रण पाया जा सके। सुभाष रावत, अवतार नेगी, संदीप पुष्पवाण एवं सुरेंद्र रावत समेत अनेक स्थानीय निवासियों ने त्वरित कार्यवाही के लिए पशुपालन विभाग का अभार व्यक्त करते हुए कहा कि संकट की इस घड़ी में प्रशासन एवं पशुपालक एक साथ मिलकर खड़े हैं। कहा कि समन्वित प्रयासों से बीमारी पर जल्द नियंत्रण कर लिया जाएगा।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
—सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com